अधिकार 2
क्षायिक सम्यक्त्व

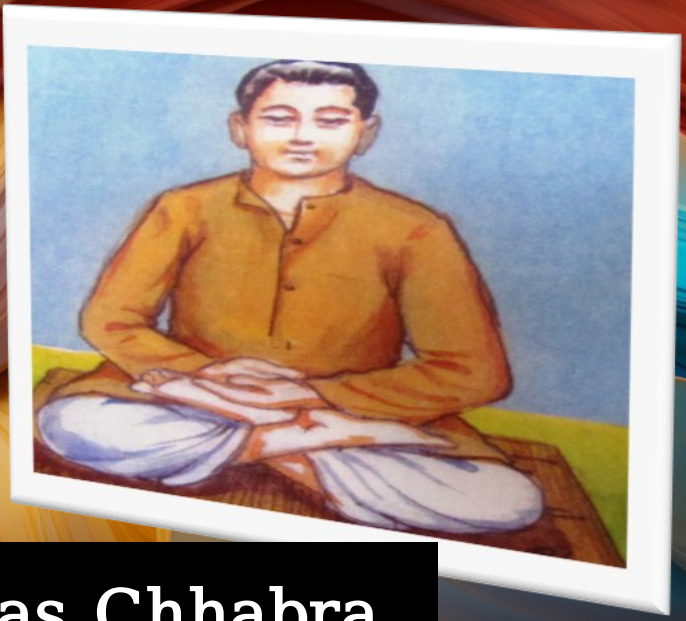

Presentation Developed By: Smt Sarika Vikas Chhabra

मंगलाचरण

जयन्त्यर्हद्विधूताङ्ग-सूर्युपाध्यायसाधवः ।
लोकेऽस्मिन् भव्यलोकानां, शरणोत्तममङ्गलम् ॥

- अन्वयार्थ- (अस्मिन् लोके) इस लोक में (भव्यलोकानां) भव्य जीवों के (शरणोत्तममंगलम्) शरण, उत्तम और मंगलस्वरूप (अर्हद्विधूताङ्ग-सूर्युपाध्याय-साधवः) अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु (जयन्ति) सर्वोत्कृष्ट रूप हैं ।

www.JainKosh.org

दंसणमोहक्खवणा-पट्ठवगो कम्मभूमिजो मणुसो । तित्थयरपादमूले, केवलिसुदकेवलीमूले ॥110॥

- अन्वयार्थ- (तित्थयरपादमूले) तीर्थंकर के पादमूल में अथवा (केवलिसुदकेवलीमूले) केवली अथवा श्रुतकेवली के पादमूल में
- (कम्मभूमिजो मणुसो) कर्मभूमि में उत्पन्न हुआ मनुष्य
- (दंसणमोहक्खवणापट्ठवगो) दर्शनमोह की क्षपणा प्रारम्भ करता है ॥110॥

www.JainKosh.org

क्षायिक सम्यक्त्व की उत्पत्ति की सामग्री

दर्शनमोह की क्षपणा के लिए भी 3 करण परिणाम होते हैं ।

उन करण परिणामों का स्वरूप पूर्वकथित अनुसार ही जानना चाहिए ।

परंतु यहाँ की विशुद्धि भिन्न प्रकार की होती है क्योंकि भिन्न कार्यों के लिए भिन्न कारण होते हैं ।

www.JainKosh.org

अध:प्रवृत्तकरण के प्रथम समय से प्रारंभ करके

मिथ्यात्व, मिश्र प्रकृति के द्रव्य को

सम्यक्त्व प्रकृति में

जितने अंतर्मुहूर्त काल तक संक्रमित करता है,

उसे दर्शनमोह की क्षपणा का प्रस्थापक कहते हैं ।

www.JainKosh.org

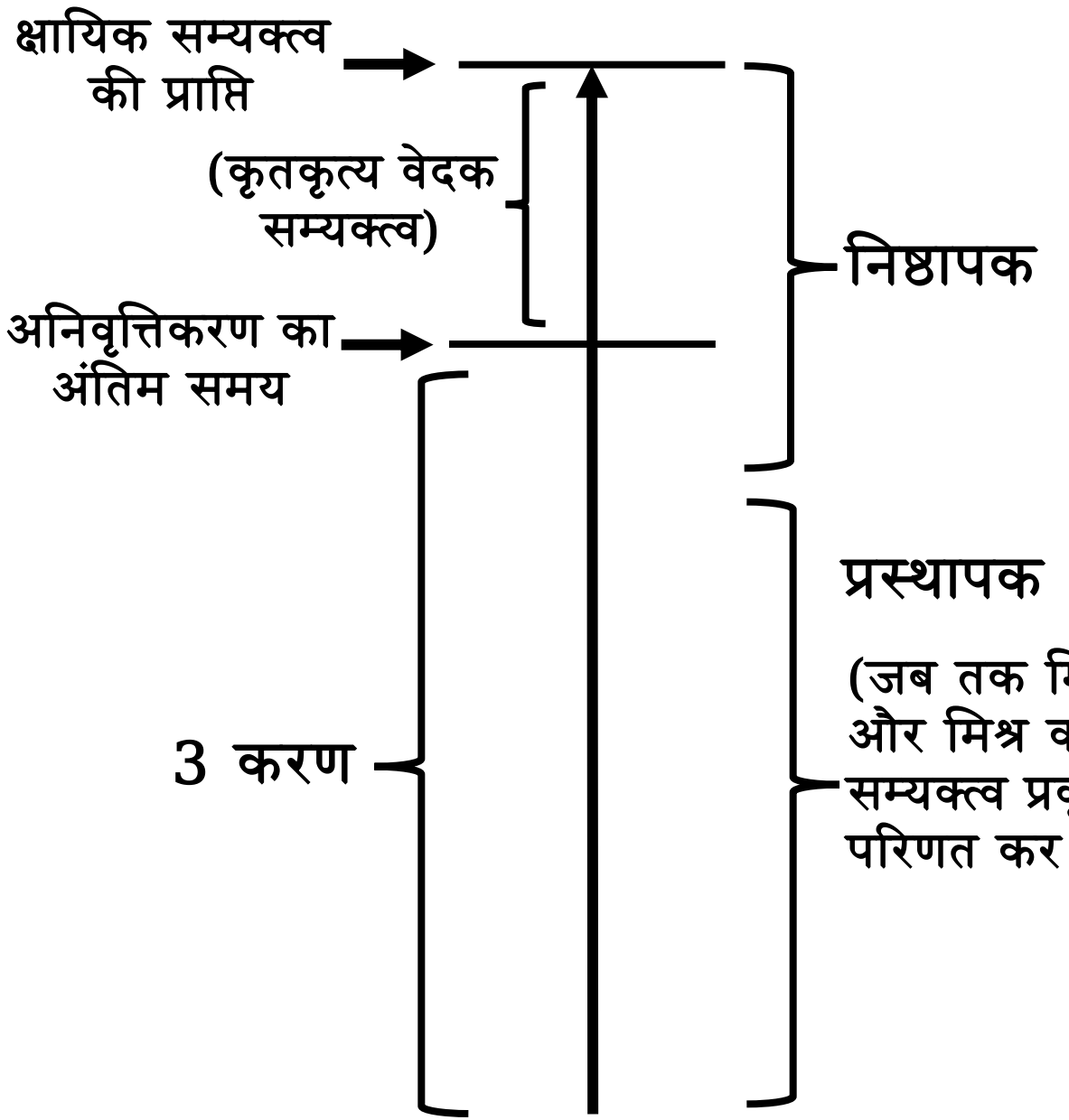

क्षायिक सम्यक्त्व की प्राप्ति
(कृतकृत्य वेदक सम्यक्त्व)
निष्ठापक
अनिवृत्तिकरण का अंतिम समय
प्रस्थापक
(जब तक मिथ्यात्व और मिश्र को सम्यक्त्व प्रकृतिरूप परिणत कर रहा है)
3 करण

क्षायिक सम्यक्त्व की प्रक्रिया

प्रस्थापक कौन होता है ?

कर्मभूमि में उत्पन्न हुआ मनुष्य

तीर्थंकर, केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में

दर्शन मोह की क्षपणा प्रारंभ करता है ।

15 कर्मभूमियों में उत्पन्न पर्याप्त मनुष्य ही प्रस्थापक होता है । भोगभूमि आदि में जन्मा या अपर्याप्त अन्य मनुष्य नहीं ।

प्रश्न – केवली के पादमूल के बिना क्यों नहीं करता ?

उत्तर – क्योंकि उनके निमित्त बिना क्षपणा के योग्य विशुद्धि-विशेष नहीं होती है ।

णिट्ठवगो तट्ठाणे, विमाणभोगावणीसु घम्मे य ।
कदकरणिज्जो चदुसु वि, गदीसु उप्पज्जदे जम्हा ॥111॥

- अन्वयार्थ- (तट्ठाणे) उसी स्थान में (जिस भव में क्षय का प्रारम्भ किया उसी भव में) (य) अथवा
- (विमाणभोगावणीसु) विमान में (स्वर्ग में) अथवा भोगभूमि में अथवा
- (घम्मे) घर्मानामक प्रथम नरक पृथ्वी में (णिट्ठवगो) निष्ठापक (समाप्ति करने वाला) होता है
- (जम्हा) क्योंकि (कदकरणिज्जो) कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि (चदुसु वि गदीसु) चारों ही गतियों में (उप्पज्जदे) उत्पन्न होता है ॥111॥

www.JainKosh.org

निष्ठापक

मिथ्यात्व, मिश्र के द्रव्य को

सम्यक्त्व प्रकृतिरूप संक्रमण करके

अनंतर समय से लेकर क्षायिक सम्यक्त्व के ग्रहण करने के पूर्व तक

वह जीव,

दर्शनमोह की क्षपणा का निष्ठापक कहलाता है ।

वह निष्ठापन कहाँ होता है?

1) जहाँ प्रस्थापन किया था, उसी मनुष्य भव में

अथवा मरण हो जाने पर:

- 2) वैमानिक देवों में – कल्पोपपन्न में या कल्पातीत में ।
- 3) भोगभूमि तिर्यंच या मनुष्य में
- 4) प्रथम नरक में

अर्थात् चारों ही गतियों में क्षपणा का निष्ठापन हो सकता है ।

प्रश्न – नरक, तिर्यंच आदि में निष्ठापन कैसे हो सकता है? क्योंकि सम्यग्दृष्टि मनुष्य तो स्वर्ग में ही जाता है ।

उत्तर – जिसने सम्यक्त्व प्राप्ति के पूर्व मिथ्यात्व अवस्था में नरक, तिर्यंच या मनुष्य आयु बांध ली हो, पश्चात् सम्यक्त्व प्राप्त करके, दर्शन मोह की क्षपणा प्रारंभ की हो, ऐसा वह कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि प्रथम नरक में या भोगभूमि तिर्यंच में या भोगभूमि मनुष्य में उत्पन्न होकर क्षपणा का निष्ठापन कर सकता है ।

ध्यान रहे – निष्ठापन उसी मनुष्य भव में बिना मरण के भी होता है । निष्ठापन करते समय मरण होता ही है – ऐसा कोई नियम नहीं है । यहाँ यह बताया है कि यदि मरण हो, तो निष्ठापन कहाँ हो सकता है ।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि जीव ने यद्यपि नरकायु बांध ली है, फिर भी वह क्षायिक सम्यक्त्व के योग्य विशुद्धि प्राप्त कर सकता है । परिणामों की विचित्रता एवं महिमा है ।

पुव्वं तियरणविहिणा, अणं खु अणियट्टिकरणचरिमम्हि ।
उदयावलिबाहिरगं, ठिदिं विसंजोजदे णियमा ॥112॥

- अन्वयार्थ- दर्शन मोह की क्षपणा के (पुव्वं) पूर्व (तियरणविहिणा) तीन करण विधान द्वारा (अणं खु) अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ का (उदयावलिबाहिरगं ठिदिं) उदयावली के बाहर की स्थिति का (अणियट्टिकरण-चरिमम्हि) अनिवृत्तिकरण के अंतिम समय में (णियमा) नियम से (विसंजोजदे) विसंयोजन करता है ॥112॥

www.JainKosh.org

अनंतानुबंधी की विसंयोजना

दर्शन मोह की क्षपणा के पूर्व अनंतानुबंधी का क्षय अनिवार्य है । इसके क्षय को विसंयोजना कहते हैं ।

विसंयोजना के लिये तीन करण परिणाम किये जाते हैं । करण परिणाम के बिना अनंतानुबंधी का क्षय नहीं होता ।

वेदक सम्यक्त्व अथवा उपशम सम्यक्त्व में विसंयोजना की जा सकती है । अतः असंयत, देशसंयत, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत – इन चार गुणस्थानों में से किसी एक गुणस्थान में विसंयोजना होती है ।

विसंयोजना के पश्चात् कोई जीव क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त ना करे और पुनः मिथ्यात्व में आ जाये तो अनंतानुबंधी पुनः संयोजित हो जाती है, सत्ता में आ जाती है इसलिए इसके क्षय को विसंयोजना कहा जाता है ।

क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त कर लेने के पश्चात् अनंतानुबंधी पुनः संयोजित नहीं हो सकती है ।

अनंतानुबंधी की विसंयोजना

चूंकि उदयावली के द्रव्य को तो कांडक आदि के द्वारा नष्ट नहीं किया जा सकता । अत: उदयावली के ऊपर अनंतानुबंधी-4 के शेष समस्त द्रव्य को करण परिणामों के द्वारा चारित्र मोहनीय की अन्य 12 कषाय एवं 9 नोकषाय में संक्रमित करके नष्ट किया जाता है । इसे ही विसंयोजना कहते हैं ।

यह विसंयोजना नरकादि चारों गतियों में हो सकती है । जैसे दर्शन मोह की क्षपणा के लिये केवली-द्वय का पादमूल आवश्यक है, वैसे विसंयोजना के लिये आवश्यक नहीं है ।

प्रश्न – जब चतुर्थादि गुणस्थानों में अनंतानुबंधी का उदय ही नहीं है, तो वहाँ उसकी उदयावली कैसे संभव है?

उत्तर – वर्तमान समय से एक आवली पर्यंत के जो निषेक हैं, उनका नाम ही यहाँ उदयावली है ।

यद्यपि ये निषेक स्वमुख से उदय को प्राप्त नहीं हो रहे क्योंकि यहाँ सम्यक्त्व चल रहा है ।

तथापि इसके निषेक तो सभी क्रम से लगे हुए ही हैं ।

उनमें से एक आवली पर्यंत निषेकों को ही उदयावली कहते हैं ।

www.JainKosh.org

विसंयोजना के लिये अध:प्रवृत्तकरण

जैसे प्रथमोपशम सम्यक्त्व के ग्रहण के लिये अध:प्रवृत्तकरण कहा है, वैसे ही यहाँ अध:प्रवृत्तकरण जानना चाहिए ।

1. इसमें जीव की प्रतिसमय अनंतगुणी विशुद्धि बढ़ती है ।
2. प्रत्येक अंतर्मुहूर्त में स्थितिबंधापसरण होता है ।
3. प्रत्येक समय में पुण्य प्रकृतियों का अनुभाग बंध अनंत गुणा बढ़ता है ।
4. प्रत्येक समय में पाप प्रकृतियों का अनुभाग बंध अनंत गुणा घटता है ।

इस प्रकार अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत अध:प्रवृत्तकरण प्रवर्तता है ।

www.JainKosh.org

विसंयोजना के लिये अपूर्वकरण

अपूर्वकरण में जीव निम्न 4 आवश्यक प्रारंभ करता है –

1) गुणश्रेणी निर्जरा

पूर्व में कही गुणश्रेणी निर्जरा की तरह यहाँ भी गुणश्रेणी निर्जरा प्रारंभ की जाती है ।

गुणश्रेणी का आयाम अपूर्वकरण + अनिवृत्तिकरण + $\frac{\text{अनिवृत्तिकरण}}{\text{संख्यात}}$ प्रमाण होता है।

यद्यपि ये प्रथमोपशम सम्यक्त्व की तरह ही आयाम है । तथापि वहाँ के आयाम से संख्यात गुणा हीन है । क्योंकि गुणश्रेणी के आयाम तथा द्रव्य इस प्रकार प्रवृत्त होते हैं-

www.jainkosh.org

स्थिति	द्रव्य	आयाम
प्रथमोपशम सम्यक्त्व ग्रहण के लिये गुणश्रेणी	स्तोक	अंतर्मुहूर्त
देशसंयम में गुणश्रेणी	पूर्व × असंख्यात	$\frac{\text{अंतर्मुहूर्त}}{\text{संख्यात}}$
सकलसंयम में गुणश्रेणी	पूर्व × असंख्यात	$\frac{\text{अंतर्मुहूर्त}}{\text{संख्यात}\times\text{संख्यात}}$
विसंयोजना के लिये गुणश्रेणी	पूर्व × असंख्यात	$\frac{\text{अंतर्मुहूर्त}}{\text{संख्यात}\times\text{संख्यात}\times\text{संख्यात}}$
दर्शनमोह क्षपणा के लिये गुणश्रेणी	पूर्व × असंख्यात	$\frac{\text{अंतर्मुहूर्त}}{\text{संख्यात}\times\text{संख्यात}\times\text{संख्यात}\times\text{संख्यात}}$

इससे ज्ञात होता है कि विसंयोजना में लगने वाला काल, प्रथमोपशम सम्यक्त्व की प्राप्ति में लगे काल से संख्यात गुणा हीन है क्योंकि यहाँ के अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण का काल; पूर्व से संख्यात गुणा हीन है।

यहाँ उदयावली-बाह्य गलितावशेष गुणश्रेणी है । अपूर्वकरण के प्रत्येक समय में असंख्यात गुणा-असंख्यात गुणा द्रव्य अपकृष्ट करके गुणश्रेणी आयाम में निक्षिप्त किया जाता है ।

www.jainkosh.org

अपूर्वकरण के आवश्यक

इस प्रकार संख्यात हजारों स्थितिखंड, स्थितिबंध, अनुभागखंड के द्वारा अपूर्वकरण का काल समाप्त करके अनिवृत्तिकरण में प्रवेश करता है ।

2) अनुभागकांडकघात

- प्रथमोपशम सम्यक्त्व के अनुभागकांडक की तरह प्रत्येक कांडक में अनंत बहुभाग अनुभाग घाता जाता है।

3) स्थितिकांडकघात

- प्रथमोपशम सम्यक्त्व के स्थितिकांडक आयाम से यहाँ का स्थितिकांडक आयाम संख्यात गुणा है अर्थात् पूर्व के स्थिति घात से संख्यात गुणी स्थिति घाती जाती है ।

4) गुणसंक्रमण

- गुणसंक्रमण पूर्व से असंख्यात गुणा है । परंतु यहाँ अनंतानुबंधी चतुष्क का ही गुणसंक्रमण होता है ।

www.JainKosh.org

अणियट्टीअद्धाए, अणस्स चत्तारि होंति पव्वाणि ।
सायरलक्खपुधत्तं, पल्लं दूरावकिट्टि उच्छिट्ठं ॥113॥

- अन्वयार्थ- (अणियट्टीअद्धाए) अनिवृत्तिकरणकाल में (अणस्स) अनन्तानुबंधी कषायों के (सायरलक्खपुधत्तं) पृथक्त्वलक्ष सागर, (पल्लं) पल्य, (दूरावकिट्टि) दूरापकृष्टि और (उच्छिट्ठं) उच्छिष्टावली – इस प्रकार (चत्तारि पव्वाणि) चार पर्व (होंति) होते हैं ॥113॥

www.JainKosh.org

अनिवृत्तिकरण में स्थिति खंड होने से अनंतानुबंधी चतुष्क के विभिन्न सत्त्व के स्थान इस प्रकार बनते हैं –

यह घटता हुआ सत्त्व अनंतानुबंधी का ही होता है ।

क्योंकि इसके स्थितिकांडक आयाम विशेष हैं ।

शेष कर्मों की स्थिति-सत्त्व घटने पर भी अंत:कोटाकोटी सागर प्रमाण होता है।

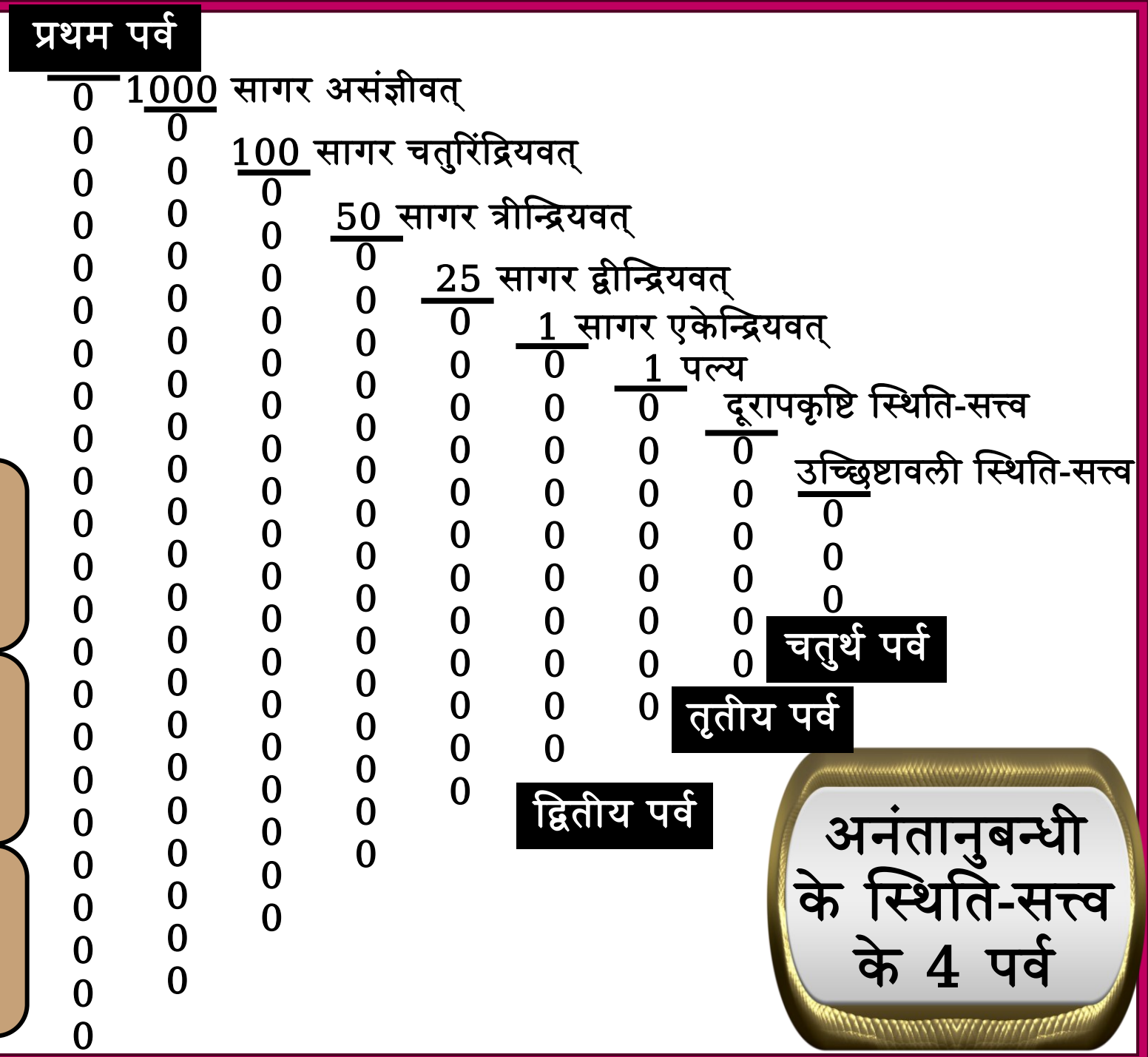

अनंतानुबन्धी के स्थिति-सत्त्व के 4 पर्व

दूरापकृष्टि

$\frac{\text{पल्य}}{\text{जघन्य परीत असंख्यात}}$ से $\frac{\text{पल्य}}{\text{उत्कृष्ट संख्यात}}$ के बीच में जो एक-एक राशि है, वह दूरापकृष्टि कहलाती है ।

यह अनेकों भेद वाली है । उनमें से कोई एक भेद जो जिनेंद्र भगवान के द्वारा देखा गया है वह यहाँ पर दूरापकृष्टि जानना चाहिए ।

उदाहरण – माना कि पल्य, 960, उत्कृष्ट संख्यात = 15, जघन्य परीत असंख्यात = 16

तो $\frac{\text{पल्य}}{\text{जघन्य परीत असंख्यात}} = \frac{960}{16} = 60$ से $\frac{\text{पल्य}}{\text{उत्कृष्ट संख्यात}} = \frac{960}{15} = 64$ के बीच के जो विकल्प हैं

अर्थात् 61, 62, 63 – ये तीन 60 और 64 के बीच के विकल्प हैं ।

इन्हें ही दूरापकृष्टि कहते हैं ।

इसी प्रकार वास्तविक संख्या में जानना ।

पल्लस्स संखभागो, संखा भागा असंखगा भागा।
ठिदिखंडा होंति कमे, अणस्स पव्वादु पव्वो त्ति ॥114॥

- अन्वयार्थ - (अणस्स) अनन्तानुबन्धी के स्थिति-सत्त्व के (पव्वादु पव्वो त्ति) एक पर्व से लेकर दूसरे पर्व तक (कमे) क्रम से (पल्लस्स संखभागो, संखा भागा, असंखगा भागा) पल्य का संख्यातवाँ भाग, संख्यात बहुभाग और असंख्यात बहुभागमात्र आयामवाले (ठिदिखंडा) स्थितिकाण्डक (होंति) होते हैं ॥114॥

www.JainKosh.org

अनंतानुबंधी के स्थिति-सत्त्व के चार पर्वों में कांडकायाम

पर्व	संदृष्टि	स्थितिकांडक आयाम का प्रमाण
पृथक्त्व लक्ष सा	सा ७-८ ल	$\frac{\text{पल्य}}{\text{संख्यात}}$
पल्योपम	प	
दूरापकृष्टि	प ५ ५ ५ ५	पल्य का संख्यात बहुभाग
उच्छिष्टावली		पल्य का असंख्यात बहुभाग

अणियट्टीसंखेज्जाभागेसु गदेसु अणगठिदिसत्तो ।
उदधिसहस्सं तत्तो, वियलेयसमं तु पल्लादी ॥115॥

- अन्वयार्थ- (अणियट्टीसंखेज्जाभागेसु गदेसु) अनिवृत्तिकरण का संख्यात बहुभाग काल व्यतीत होने पर (अणगठिदिसत्तो) अनन्तानुबंधी का स्थिति-सत्त्व (उदधिसहस्सं) हजार सागर होता है ।
- (तत्तो) उसके पश्चात् (वियलेयसमं) विकलेन्द्रिय और एकेन्द्रिय के बंध के समान होता है।
- उसके पश्चात् (पल्लादि) पल्य आदि होता है ॥115॥

www.JainKosh.org

अनिवृत्तिकरण का संख्यात बहुभाग बीतने पर अनंतानुबंधी का स्थिति-सत्त्व घट-घटकर क्रमशः इस प्रकार हो जाता है-

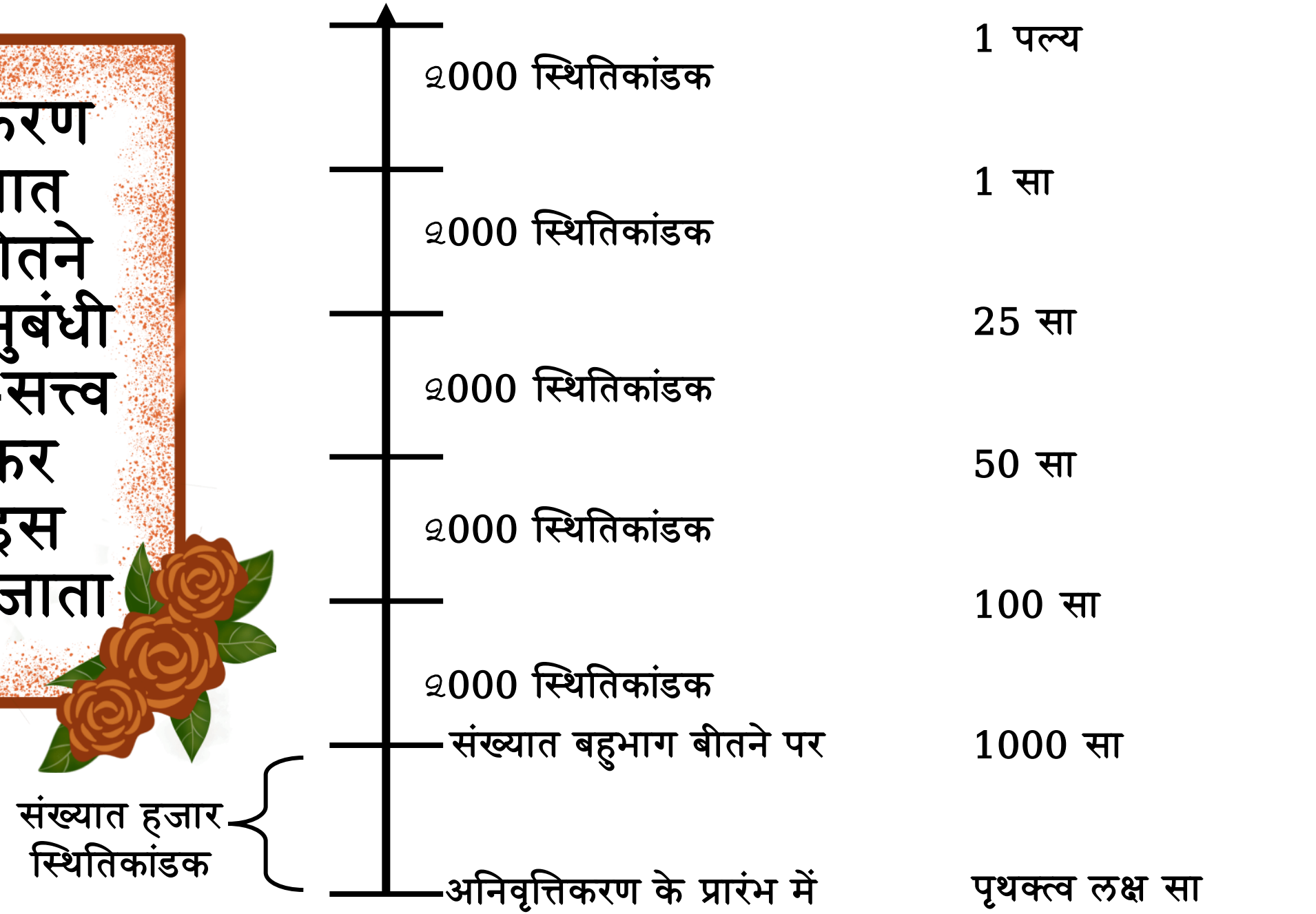

www.JainKosh.org

उवहिसहस्सं तु सयं, पण्णं पणुवीसमेक्कयं चेव ।
वियलचउक्के एगे, मिच्छुक्कस्सट्ठिदी होदि ॥116॥

- अन्वयार्थ- (वियलचउक्के) विकल-चतुष्क अर्थात् असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व द्वीन्द्रिय में और (एगे) एकेन्द्रिय में (मिच्छुक्कस्सट्ठिदी) मिथ्यात्व का उत्कृष्ट स्थितिबंध (क्रमशः) (उवहिसहस्सं तु) हजार सागर, (सयं) सौ सागर, (पण्णं) पचास सागर, (पणवीसं) पच्चीस सागर (एक्कयं चेव) और एक सागर (होदि) होता है ॥116॥

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व का उत्कृष्ट स्थिति-बंध

स्वामी	बंध
एकेन्द्रिय	एक सागर
द्वीन्द्रिय	पच्चीस सागर
त्रीन्द्रिय	पचास सागर
चतुरिन्द्रिय	सौ सागर
असंज्ञी पंचेन्द्रिय	एक हजार सागर

www.JainKosh.org

1 कांडक का द्रव्य

अनंतानुबंधी क्रोध आदि के सत्त्व में से गुणश्रेणी द्वारा प्रतिसमय अपकर्षण करके द्रव्य नीचे निक्षिप्त किया जाता है तथा स्थितिकांडकघात द्वारा स्थिति घाती जाती है ।

- यहाँ 1 कांडक का द्रव्य लाते हैं –
- $\frac{\text{पल्य}}{\text{संख्यात}}$ प्रमाण स्थिति एक कांडक के द्वारा घाती जाती है,
- तो संख्यात पल्य प्रमाण स्थिति कितने कांडक द्वारा घाती जायेगी ?
- $\frac{1}{\frac{\text{पल्य}}{\text{संख्यात}}} \times$ संख्यात पल्य $= \frac{\text{संख्यात} \times \text{संख्यात पल्य}}{\text{पल्य}} =$ संख्यात कांडक

- अनंतानुबंधी क्रोध का द्रव्य $= \frac{\text{स } \partial \text{ १२ } -}{\text{७ ख १७}}$ है।
- संख्यात कांडकों द्वारा यह संपूर्ण द्रव्य विसंयोजित किया जाता है,
- तो 1 कांडक द्वारा कितना द्रव्य विसंयोजित किया जाता है?
- $\frac{\text{स } \partial \text{ १२ } -}{\text{७ ख १७ । संख्यात}}$ अर्थात् सत्त्व द्रव्य का संख्यातवाँ भाग एक कांडक द्वारा विसंयोजित किया जाता है ।

इस एक कांडक द्रव्य को गुणसंक्रम भागहार से भाग देकर एक फाली होती है । कांडक के प्रत्येक समय असंख्यात गुणा फाली द्रव्य होता है । अंतिम फाली में शेष रहे समस्त द्रव्य को ग्रहण करके कांडक पूर्ण होता है ।

इस प्रकार करते हुए अनिवृत्तिकरण के अंतिम समय में अंतिम कांडक की अंतिम फाली का द्रव्य शेष 12 कषाय और नोकषाय में विसंयोजित करता है । मात्र उच्छिष्टावली का द्रव्य अनंतानुबंधी रूप से शेष रहता है । यह द्रव्य एक-एक निषेक रूप से एक आवलीकाल में विसंयोजित होता है ।

इस प्रकार अनंतानुबंधी की विसंयोजना पूर्ण होती है ।

उच्छिष्टावली के निषेक

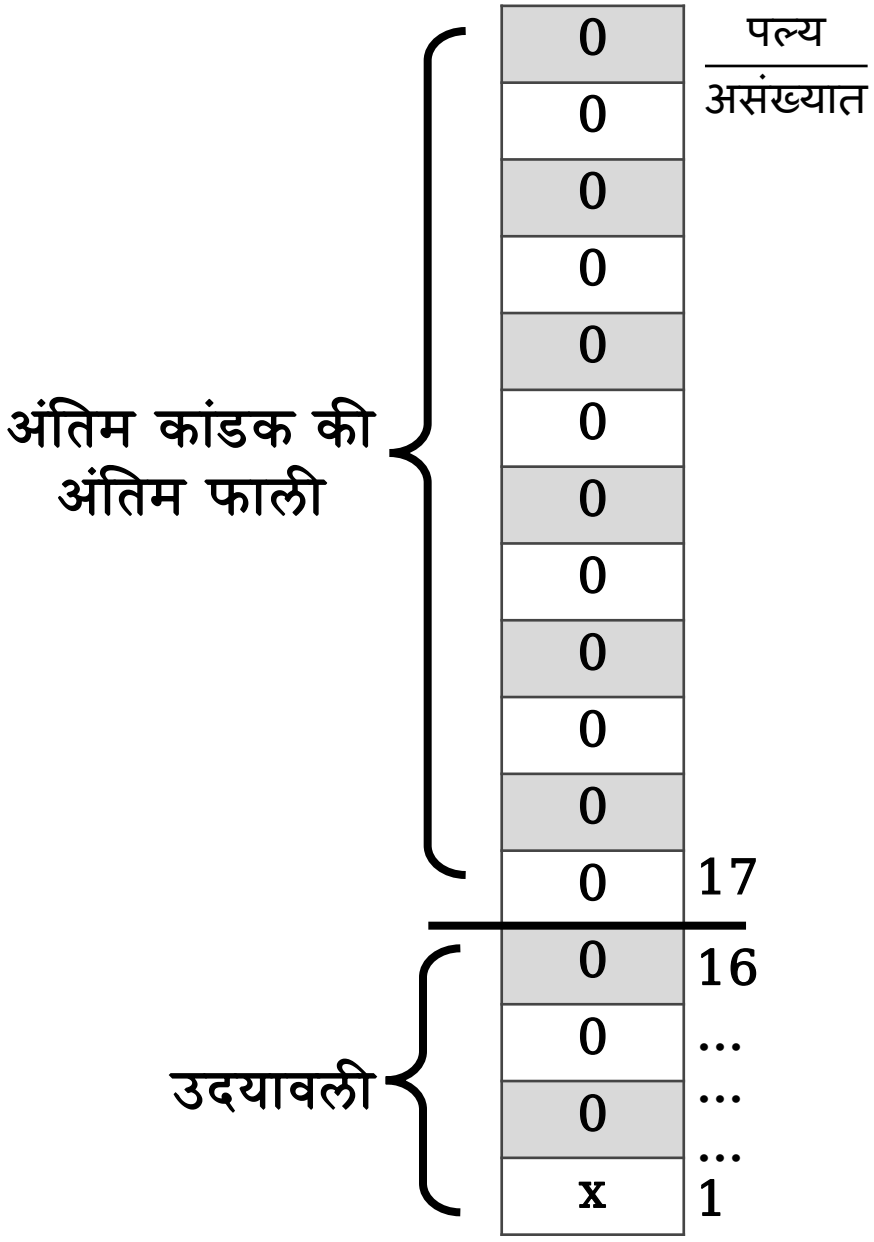

अनिवृत्तिकरण का अंतिम समय

ये उच्छिष्टावली के निषेक स्तिबुक संक्रमण द्वारा अन्य उदयवाली प्रकृति में संक्रमित होंगे ।

0	16
0	...
0	...
x	2

अनंतर समय

www.JainKosh.org

अंतोमुहुत्तकालं, विस्समिय पुणो वि तिकरणं करिय ।
अणियट्टीए मिच्छं, मिस्सं सम्मं कमेण णासेइ ॥117॥

- अन्वयार्थ - अनन्तानुबन्धी का विसंयोजन करने के पश्चात् (अंतोमुहुत्तकालं विस्समिय) अन्तर्मुहूर्तकाल विश्राम करके (पुणो वि) पुनः (तिकरणं करिय) तीन करण करके (अणियट्टीए) अनिवृत्तिकरणकाल में (मिच्छं मिस्सं सम्मं कमेण) मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्त्व प्रकृति का क्रम से (णासेइ) नाश करता है ॥117॥

www.JainKosh.org

विसंयोजन के पश्चात् विश्राम

विसंयोजन के पश्चात् अंतर्मुहूर्त काल तक अतिशय विशुद्धि नहीं होती है । इसलिए अंतर्मुहूर्त काल तक स्वस्थान में स्थित रहने के बाद ही कर्म की क्षपणा में प्रवृत्त हो सकेगा । इसे ही 'अंतर्मुहूर्त काल तक विश्राम करता है' – ऐसा कहा जाता है ।

यदि किसी जीव ने पूर्व में ही विसंयोजना कर ली है, तो वह सीधे ही योग्य सन्निधान में दर्शन मोह की क्षपणा कर सकता है । विसंयोजना के तत्काल अनंतर ही क्षपणा प्रारंभ करता है – ऐसा नियम नहीं है ।

www.JainKosh.org

विसंयोजन के पश्चात् विश्राम

कोई विसंयोजना करने के बाद सम्यक्त्व सहित 66 सागर आदि भ्रमण कर सकता है अथवा पुनः मिथ्यात्व को भी प्राप्त हो सकता है । अथवा विसंयोजना अन्य गति में करके मनुष्य भव प्राप्त करके दर्शन मोह की क्षपणा में उद्यत हो सकता है — इत्यादि अनेकों विकल्प बन सकते हैं ।

विसंयोजना के पश्चात् क्षपणा करे, तो कितनी जल्दी कर सकता है – यह ध्यान रखकर यहाँ ग्रंथ में कथन किया गया है ।

www.JainKosh.org

दर्शनमोह की क्षपणा के लिये अध:प्रवृत्तकरण

क्षपणा करने हेतु 3 करण परिणाम आवश्यक होते हैं ।

उनमें से प्रथम अध:प्रवृत्तकरण को जीव प्रारंभ करता है ।

जैसा प्रथमोपशम सम्यक्त्व की प्राप्ति हेतु अध:प्रवृत्तकरण का स्वरूप कहा है, वैसे ही यहाँ भी अध:प्रवृत्तकरण अंतर्मुहूर्त काल तक प्रवर्तता है ।

ध्यान रहे कि यहाँ के परिणाम प्रथमोपशम सम्यक्त्व के अध:प्रवृत्तकरण में कहे परिणामों से भिन्न होते हैं । क्योंकि यहाँ क्षपणा संबंधित परिणामों की विशुद्धि है, वहाँ दर्शनमोह की उपशमना संबंधित परिणामों की विशुद्धि है । भिन्न कार्य, भिन्न कारणों से ही हो सकते हैं ।

www.JainKosh.org

दर्शनमोह की क्षपणा के लिये अध:प्रवृत्त करण

अध:प्रवृत्तकरण के चारों आवश्यक यहाँ पाये जाते हैं –

1. प्रतिसमय अनंतगुणी विशुद्धि से परिणाम वर्धमान होते हैं ।

2. प्रत्येक अंतर्मुहूर्त में स्थितिबंधापसरण होता है ।

3. प्रत्येक समय में पुण्य प्रकृतियों का अनुभाग बंध अनंत गुणा बढ़ता है ।

4. प्रत्येक समय में पाप प्रकृतियों का अनुभाग बंध अनंत गुणा घटता है।

www.JainKosh.org

क्षपणा संबंधी अपूर्वकरण

अंतर्मुहूर्त प्रमाण अध:प्रवृत्तकरण का काल बिताकर जीव अपूर्वकरण को प्राप्त करता है ।

जैसे अपूर्वकरण का स्वरूप उपशामना के समय कहा है, वैसा ही यहाँ भी जानना चाहिए ।

यहाँ अपूर्वकरण में पूर्व के 4 आवश्यकों के साथ यह कार्य प्रारंभ होते हैं –

1) गुणश्रेणी निर्जरा

- अपूर्वकरण के प्रथम समय से गुणश्रेणी निर्जरा प्रारंभ होती है ।
- विसंयोजक के द्वारा जितना द्रव्य गुणश्रेणी के लिये लिया जाता है, उससे असंख्यात गुणा द्रव्य क्षपक अपकर्षण करता है ।
- विसंयोजक का जो गुणश्रेणी आयाम होता है, उससे यहाँ का आयाम संख्यातगुणा हीन होता है ।

www.JainKosh.org

स्थितिकांडक घात

अपूर्वकरण में प्रविष्ट जीव के कर्मों का जघन्य सत्त्व अंत:कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण होता है । उत्कृष्ट सत्त्व; (जघन्य सत्त्व × संख्यात) होता है ।

यहाँ जघन्य कांडक $\frac{\text{पल्य}}{\text{संख्यात}}$ प्रमाण है, उत्कृष्ट कांडक पृथक्त्व सागर प्रमाण है ।

सत्त्व में अंतर होने से कांडक के आयाम में अंतर होता है क्योंकि सत्त्व के अनुसार कांडक का आयाम होता है ।

www.JainKosh.org

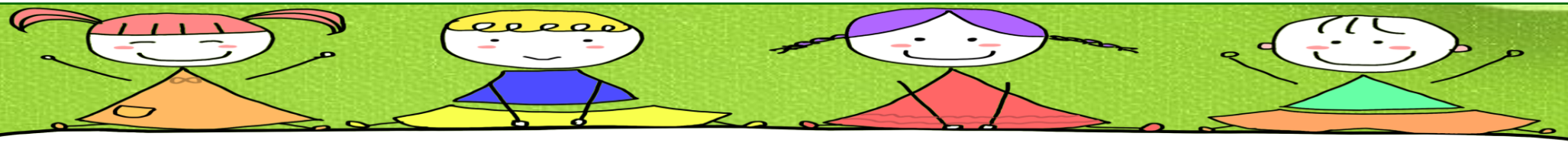

प्रश्न—सत्त्व में इस प्रकार अंतर क्यों आता है ?

उत्तर—किसी जीव ने उपशम श्रेणी पर आरोहण किया । वहाँ अपूर्वकरण में स्थितिकांडकों के द्वारा स्थिति का घात किया । उसके पश्चात् दर्शनमोह की क्षपणा में प्रवृत्त हुआ ।

किसी अन्य जीव ने उपशम श्रेणी चढ़े बिना ही दर्शनमोह की क्षपणा प्रारंभ की । तो इसके स्थिति-सत्त्व का घात नहीं हुआ है ।

ऐसी स्थिति में पहले जीव की अपेक्षा दूसरे जीव का स्थिति-सत्त्व संख्यात गुणा पाया जाता है ।

प्रश्न—सत्त्व में इस प्रकार अंतर क्यों आता है ?

2) कोई जीव वेदक सम्यक्त्व प्राप्त कर 66 सागर घूमा, मिश्र गुणस्थान प्राप्त कर पुनः वेदक सम्यक्त्व प्राप्त कर 66 सागर घूमा । उसके पश्चात् दर्शनमोह की क्षपणा में प्रवृत्त हुआ ।

किसी अन्य जीव ने वेदक सम्यक्त्व प्राप्त कर, दर्शनमोह की क्षपणा प्रारंभ की । ऐसे जीव का स्थिति-सत्त्व (2 × 66 सागर) अधिक पाया जाता है ।

इस प्रकार अनेकों विकल्पों के द्वारा यह संभव है कि क्षपणा में स्थित जीवों के कर्म का स्थिति-सत्त्व हीनाधिक रहे । यदि अधिक होगा, तो संख्यात गुणा ही अधिक होगा, इससे ज्यादा नहीं ।

www.JainKosh.org

3) अनुभागकांडकघात

- एक स्थितिकांडक के भीतर हजारों अनुभागकांडक घात प्रवर्तते हैं । प्रत्येक अनुभागकांडक में अनंत अनुभाग का नाश किया जाता है ।

4) गुणसंक्रमण

- अपूर्वकरण के प्रथम समय से मिथ्यात्व और मिश्र प्रकृति का द्रव्य सम्यक्त्व प्रकृति में गुणसंक्रमित होता है । अर्थात् प्रत्येक समय में असंख्यातगुणा-असंख्यातगुणा द्रव्य सम्यक्त्व प्रकृति में संक्रमित होता है । अन्य किसी प्रकृति का गुणसंक्रमण नहीं होता है ।

इस प्रकार हजारों स्थितिकांडकों के द्वारा अपूर्वकरण को समाप्त करता है । स्थितिकांडक के माहात्म्य से अपूर्वकरण के प्रारंभ में जितना सत्त्व था, उससे संख्यातगुणा हीन सत्त्व अपूर्वकरण के अंत में हो जाता है।

इसके पश्चात् अनिवृत्तिकरण में प्रवेश करता है । वहाँ मिथ्यात्व, मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति का क्रम से नाश करता है ।

अणियट्टिकरणपढमे, दंसणमोहस्स सेसगाण ठिदी । सायरलक्खपुधत्तं, कोडीलक्खगपुधत्तं च ॥118॥

- अन्वयार्थ - (अणियट्टिकरणपढमे) अनिवृत्तिकरण के प्रथम समय में (दंसणमोहस्स) दर्शनमोह की (ठिदि) स्थिति (सायरलक्खपुधत्तं) पृथक्त्वलक्ष सागरप्रमाण होती है (च) और (सेसगाण) बाकी के कर्मों की स्थिति (कोडीलक्खगपुधत्तं) पृथक्त्वलक्ष कोटी सागरप्रमाण होती है ॥118॥

www.JainKosh.org

अनिवृत्तिकरण में प्रविष्ट जीव के स्थिति सत्त्व

कर्म	सत्त्व
दर्शन मोहनीय	पृथक्त्व लाख सागर अर्थात् अंत:कोटि सागर प्रमाण
शेष कर्म	पृथक्त्व लाख करोड़ सागर अर्थात् अंत:कोटाकोटि सागर प्रमाण

क्षपणा के योग्य विशुद्ध परिणामों द्वारा तत्संबंधी दर्शन मोहनीय का घात विशेष होता है ।

इसलिये दर्शन मोह का सत्त्व इतना अधिक घटा है ।

शेष कर्मों का स्थिति घात सामान्य होने से उसका सत्त्व संख्यात गुणा हीन हुआ है ।

इसे सत्त्व का <u>प्रथम पर्व</u> कहते हैं ।

अंत:कोटाकोटी आदि का अर्थ

प्रमाण

- हजार से ऊपर, लाख से नीचे
- लाख से ऊपर, करोड़ से नीचे
- करोड़ से ऊपर, कोड़ाकोड़ी से नीचे

संज्ञा

- अंत:लक्ष
- अंत:कोटी
- अंत:कोटाकोटी

www.JainKosh.org

प्रथम आदि कांडक का प्रमाण

अनिवृत्तिकरण का प्रथम कांडक भिन्न हो सकता है ।

जघन्य सत्कर्म वाले जीव का कांडक जघन्य होता है । उत्कृष्ट सत्कर्म वाले जीव के उत्कृष्ट होता है ।

जघन्य कांडक से उत्कृष्ट कांडक संख्यातवाँ भाग अधिक होता है ।

द्वितीय आदि कांडकों का प्रमाण समान ही पाया जाता है ।

यहाँ कांडक का आयाम $\frac{\text{पल्य}}{\text{संख्यात}}$ होता है ।

दर्शन मोहनीय कर्म की अप्रशस्त उपशामना की व्युच्छित्ति

अनिवृत्तिकरण में प्रवेश करने पर दर्शन मोहनीय कर्म की अप्रशस्त उपशामना समाप्त हो जाती है ।

अर्थात् जो परमाणु उपशांतरूप थे, निधत्तिरूप थे या निकाचितरूप थे वे सर्व परमाणु अब सर्व करणों के योग्य हो गए हैं ।

शेष कर्मों में उपशांत, निधत्ति, निकाचित दशा बनी रहती है ।

www.JainKosh.org

जिस कर्म परमाणु का

उदीरणा

उदीरणा, संक्रमण

उदीरणा, संक्रमण, अपकर्षण, उत्कर्षण

संभव ना हो, उसे कहते हैं –

उपशान्त

निधत्ति

निकाचना

एक ही निषेक के कर्म परमाणुओं में उपशांत, निधत्ति, निकाचना के परमाणु होते हैं ।

कुछ परमाणु उपशांत, कुछ निधत्ति, कुछ निकाचना रूप पाये जाते हैं ।

अमणट्ठिदिसत्तादो, पुधत्तमेत्ते पुधत्तमेत्ते य।
ठिदिखंडये हवंति हु, चउ ति वि एयक्ख पल्लठिदी ॥119॥

- अन्वयार्थ - (अमणट्ठिदिसत्तादो) असंज्ञी पंचेन्द्रिय के स्थितिबन्ध के समान स्थिति-सत्त्व होने के पश्चात् (पुधत्तमेत्ते पुधत्तमेत्ते य) पृथक्त्वप्रमाण-पृथक्त्वप्रमाण (ठिदिखंडये) स्थितिकांडक बीतने पर (चउ ति वि एयक्ख पल्लठिदि) चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, एकेन्द्रिय के स्थितिबंध के समान और पल्य प्रमाण स्थिति (हवंति हु) होती है ॥119॥

www.JainKosh.org

स्थितिघात होने से क्रमश: घटता हुआ दर्शनमोह का सत्त्व

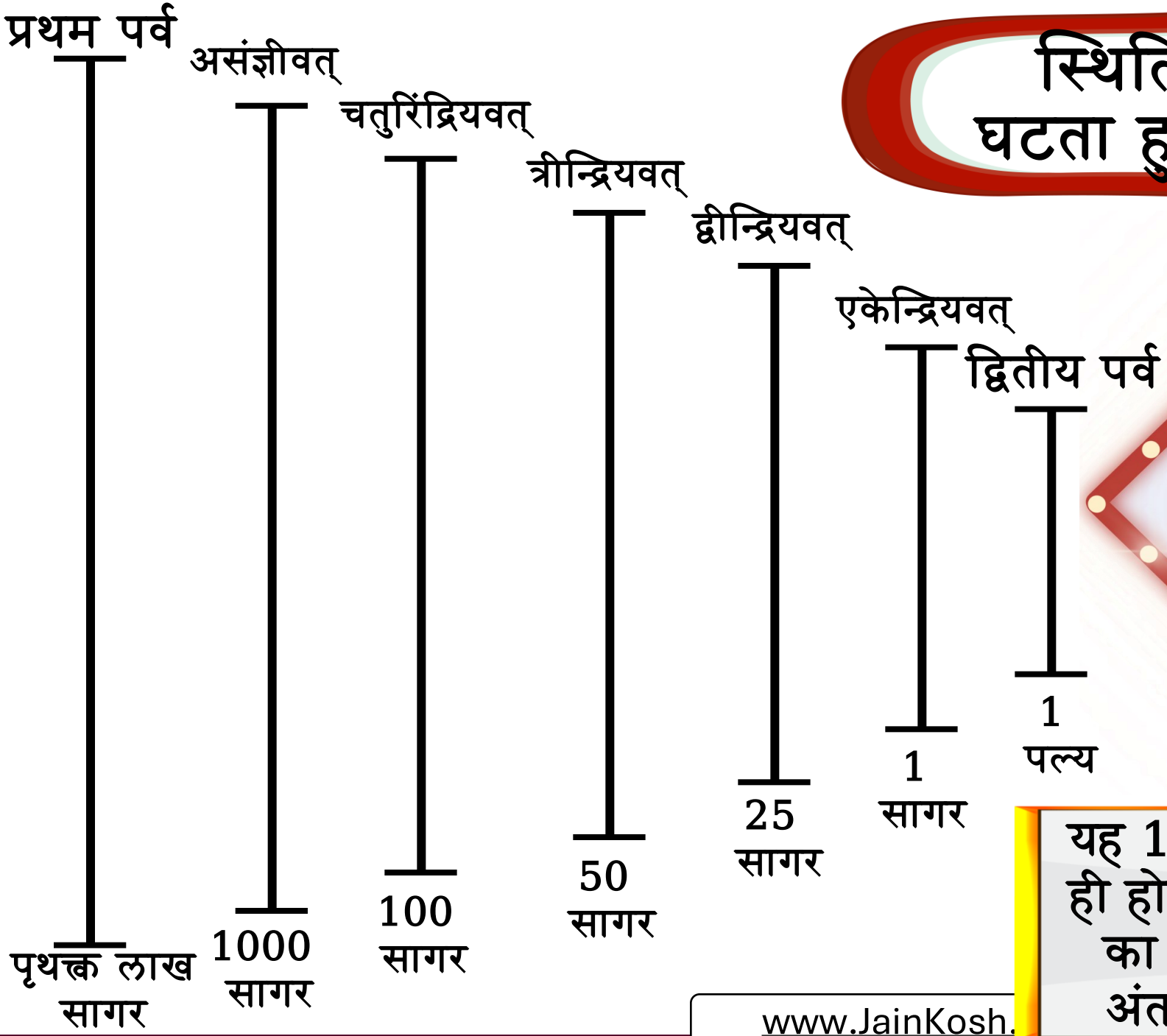

क्रमश: संख्यात हजार स्थितिखण्ड होने से दर्शनमोह क्षपक के अनिवृत्तिकरण में संख्यात बहुभाग बीतने पर दर्शनमोहनीय का सत्त्व इतना होता है –

यह 1 पल्य प्रमाण सत्त्व दर्शन मोहनीय का ही होता है, शेष कर्मों का नहीं । शेष कर्मों का स्थितिघात होने पर भी उनका सत्त्व अंत:कोटाकोटी सागर प्रमाण होता है ।

www.JainKosh.

पल्लट्ठिदिदो उवरिं, संखेज्जसहस्समेत्तठिदिखंडे ।
दूरावकिट्टिसण्णिदठिदिसत्तं होदि णियमेण ॥120॥

- अन्वयार्थ- (पल्लट्ठिदिदो उवरिं) पल्यमात्र स्थिति-सत्त्व होने के बाद (संखेज्जसहस्समेत्त ठिदिखंडे) संख्यात हजारप्रमाण स्थितिखंड होने पर (णियमेण) नियम से (दूरावकिट्टिसण्णिदठिदिसत्तं) दूरापकृष्टि नाम का स्थिति-सत्त्व (होदि) होता है ॥120॥

www.JainKosh.org

तृतीय पर्व

पल्य प्रमाण स्थिति-सत्त्व होने पर स्थितिकांडक का आयाम पल्य का संख्यात बहुभाग प्रमाण होता है ।

अर्थात् एक संख्यातवाँ भाग शेष रखकर शेष बहुभाग सत्त्व का घात होता है ।

ऐसे बहुभाग का घात करते-करते दूरापकृष्टि प्रमाण सत्त्व रह जाता है ।

यह सत्त्व का तृतीय पर्व कहलाता है ।

www.JainKosh.org

दूरापकृष्टि

पल्योपम प्रमाण स्थितिसत्कर्म से

अत्यंत दूर उतरकर

सबसे जघन्य $\frac{\text{पल्य}}{\text{संख्यात}}$ प्रमाण

जो स्थितिसत्कर्म शेष रहता है,

उसकी दूरापकृष्टि संज्ञा है ।

क्योंकि पल्य प्रमाण सत्कर्म से नीचे

अत्यंत दूर तक अपकर्षित की गई होने से और

अत्यंत कृश (अल्प) होने से

यह स्थिति दूरापकृष्टि कहलाती है ।

www.JainKosh.org

बहुभाग घात का उदाहरण

उदाहरण – मानाकि पल्य = 50000 वर्ष, संख्यात = 5, $\frac{\text{पल्य}}{\text{संख्यात}} = \frac{50000}{5} = 10000$ एक भाग

10000 वर्ष प्रमाण स्थिति-सत्त्व रखकर शेष 40000 वर्ष प्रमाण सत्त्व का घात करता है ।

द्वितीय कांडकघात में $\frac{10000}{5} = 2000$ वर्ष सत्त्व रखकर शेष 8000 वर्ष प्रमाण सत्त्व का घात करता है।

इसी प्रकार उत्तरोत्तर संख्यातवाँ भाग शेष रखकर बहुभाग का घात करता है ।

इसी प्रकार वास्तविक पल्य में जानना चाहिए ।

पल्लस्स संखभागं, तस्स पमाणं तदो असंखेज्जा ।
भागपमाणे खंडे, संखेज्जसहस्सगेसु तीदेसु ॥121॥
सम्मस्स असंखाणं, समयपबद्धाणुदीरणा होदि ।
तत्तो उवरिं तु पुणो, बहुखंडे मिच्छउच्छिट्ठं ॥122॥

- अन्वयार्थ - (तस्स पमाणं) उस दूरापकृष्टि का प्रमाण (पल्लस्स संखभागं) पल्य का संख्यातवाँ भाग है। (तदो) उसके बाद (असंखेज्जा भागपमाणे) पल्य का असंख्यात बहुभागप्रमाण (संखेज्जसहस्सगेसु खंडे तीदेसु) संख्यात हजार स्थितिकांडक व्यतीत होने पर वहाँ
- (सम्मस्स) सम्यक्त्व प्रकृति के (असंखाणं समयपबद्धाणुदीरणा) असंख्यात समयप्रबद्धों की उदीरणा (होदि) होती है।
- (तत्तो उवरिं तु) उसके बाद (पुणो) पुनः (बहुखंडे) बहुत स्थितिखंड व्यतीत होने पर (मिच्छउच्छिट्ठं) मिथ्यात्व की उच्छिष्टावली शेष रहती है ॥121-122 ॥

www.JainKosh.org

दूरापकृष्टि प्रमाण सत्त्व होने पर कांडक का आयाम

दूरापकृष्टि प्रमाण सत्त्व के होने पर $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ बहुभाग प्रमाण कांडक का आयाम होता है।

अर्थात् शेष सत्त्व में असंख्यात का भाग लगाने पर एक भाग लब्ध आया, उसे रखकर शेष बहुभाग प्रमाण सत्त्व का घात किया जाता है ।

घाता गया सत्त्व असंख्यात बहुभाग है ।

ऐसे संख्यात हजार स्थितिकांडकों का घात होने के पश्चात् सम्यक्त्व प्रकृति के असंख्यात समयप्रबद्धों की उदीरणा प्रारंभ होती है ।

जो गुणश्रेणी के अपकृष्ट द्रव्य का एक भाग उदयावली में दिया जाता था वह द्रव्य अब बढ़कर दिया जाता है ।

पहले उदयावली में द्रव्य देने का भागहार $\equiv \partial$ असंख्यात लोक था ।

अब यहाँ वह भागहार $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ होता है ।

भागहार अल्प होने से लब्ध उदीरणा द्रव्य बहुत प्राप्त होता है ।

इससे असंख्यात समयप्रबद्धों की उदीरणा होने लगती है ।

शेष कर्मों की उदीरणा पूर्ववत् ही रहती है ।

सम्यक्त्व द्रव्य

एक भाग,
अपकृष्ट द्रव्य

$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ}}$$

$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ}} \times (\text{ओ} - 1)$$

बहुभाग द्रव्य
पूर्ववत्

$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times \left(\frac{\text{प}}{\partial} - 1\right)}{\text{ओ} \times \frac{\text{प}}{\partial}}$$

अपकृष्ट द्रव्य का बहुभाग,
उपरितन स्थिति में देय

$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ} \times \frac{\text{प}}{\partial}}$$

अपकृष्ट द्रव्य का एकभाग।
गुणश्रेणी,
उदयावली में देय

$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ} \times \frac{\text{प}}{\partial} \times \frac{\text{प}}{\partial}}$$

उदयावली
द्रव्य

$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times \left(\frac{\text{प}}{\partial} - 1\right)}{\text{ओ} \times \frac{\text{प}}{\partial} \times \frac{\text{प}}{\partial}}$$

गुणश्रेणी
द्रव्य

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व का क्षय

इसके पश्चात् मिथ्यात्व प्रकृति के अनेकों पल्य के असंख्यात बहुभाग प्रमाण स्थिति कांडकों के हो जाने पर

मिथ्यात्व के अंतिम स्थितिकांडक को प्रारंभ करता है।

इसकी अंतिम फाली का पतन होने पर

उच्छिष्टावली प्रमाण निषेकों को छोड़कर

अन्य सर्व मिथ्यात्व का नाश हो जाता है ।

अर्थात् मिथ्यात्व का सर्व सत्त्व द्रव्य

मिश्र प्रकृति में संक्रमित हो जाता है ।

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व की उच्छिष्टावली का क्षय

उच्छिष्टावली प्रमाण निषेक (आवली – 2) समय में एक-एक करके क्रमशः नष्ट होते हैं ।

अंतिम कांडक	0	पल्य / असंख्यात
	0	
	0	
	0	
	0	
	0	
	0	
	0	
	0	
	0	
	0	17
उदयावली	0	16
	0	...
	0	...
	x	1

मिथ्यात्व के अंतिम कांडक की अंतिम फाली

0	16
0	...
0	...
x	2

अनंतर समय में शेष उच्छिष्टावली

मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति का स्थिति-सत्त्व

दूरापकृष्टि प्रमाण सत्त्व दर्शनमोह की तीनों प्रकृतियों का हुआ था ।

वहाँ से तीनों प्रकृतियों का असंख्यात बहुभाग प्रमाण स्थितिघात होता है ।

ऐसा करते हुए मिथ्यात्व प्रकृति के अंतिम स्थितिकांडक के द्वारा एक उच्छिष्टावली छोड़कर शेष सारा पल्य के असंख्यात भाग प्रमाण सत्त्व; घात के लिये ले लिया जाता है ।

मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति का स्थिति-सत्त्व इस समय $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ रहता है ।

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व की उच्छिष्टावली रहने पर दर्शन मोहनीय का स्थिति-सत्त्व

0
0
x

मिथ्यात्व

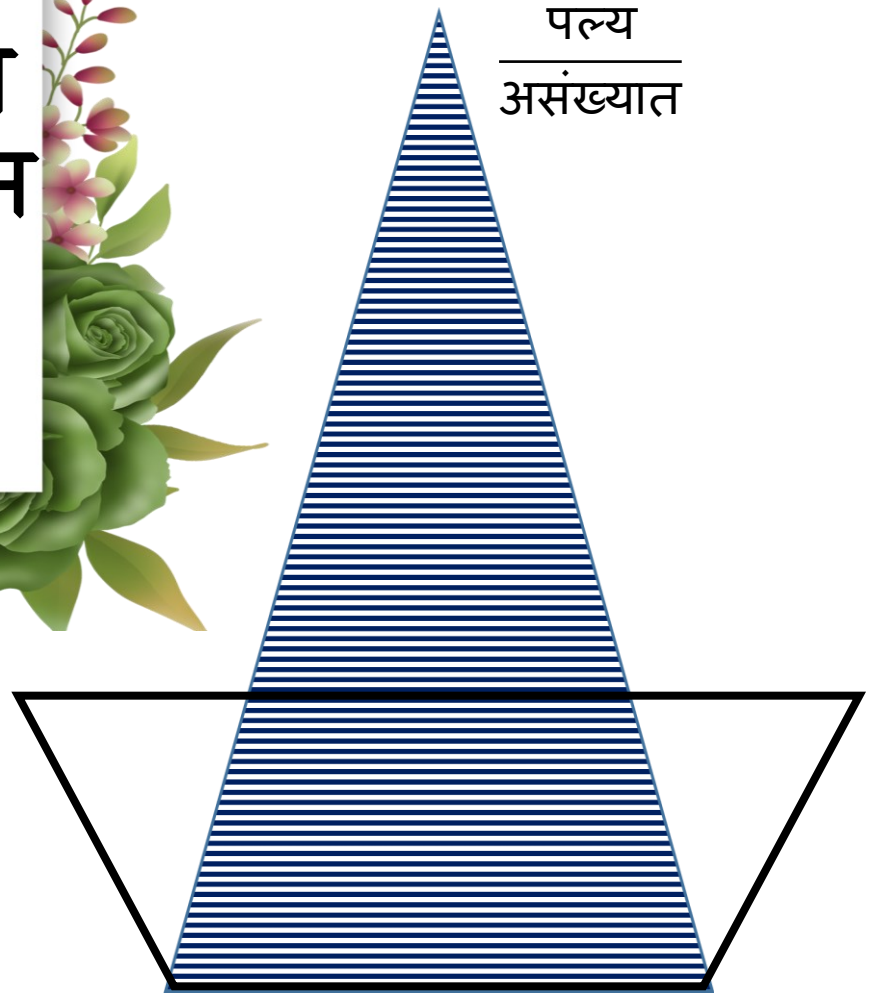

मिश्र

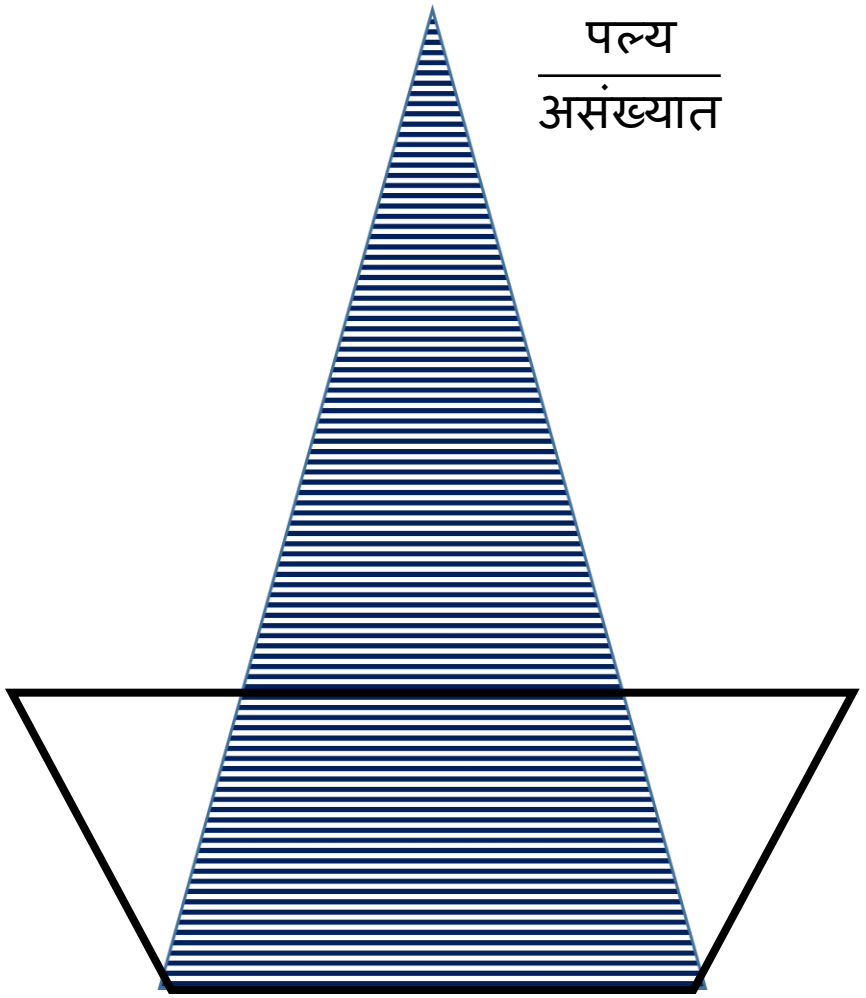

सम्यक्त्व

www.JainKosh.org

प्रश्न - उच्छिष्टावली का भी घात कांडक द्वारा क्यों नहीं होता ?

उत्तर – वर्तमान समय से एक आवली प्रमाण निषेक उदयावली के कहे जाते हैं ।

उदयावली के निषेकों का अपकर्षण, उदीरणा आदि नहीं हो सकते ।

उनका उदय अथवा स्तिबुक संक्रमण होकर ही नाश होता है ।

इसलिए उनका कांडकघात ना होकर एक-एक निषेक का उदयवाली प्रकृति में संक्रमण होकर नाश होता है ।

www.JainKosh.org

जत्थ असंखेज्जाणं, समयपबद्धाणुदीरणा तत्तो ।
पल्लासंखेज्जदिमो, हारो णासंखलोगमिदो ॥123॥

- अन्वयार्थ- (जत्थ) जहाँ (असंखेज्जाणं समयपबद्धाणुदीरणा) असंख्यात समयप्रबद्धों की उदीरणा शुरु हुई
- (तत्तो) वहाँ (पल्लासंखेज्जदिमो) पल्य का असंख्यातवाँ भाग (हारो) भागहार है, (असंखलोगमिदो) असंख्यात लोकप्रमाण (ण) भागहार नहीं है ॥123॥

www.JainKosh.org

उदयावली में द्रव्य देने का भागहार

असंख्यात समयप्रबद्धों की उदीरणा के पहले

= असंख्यात लोक

असंख्यात समयप्रबद्धों की उदीरणा से

$$= \frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$$

www.JainKosh.org

मिच्छुच्छिट्ठादुवरिं, पल्लासंखेज्जभागिगे खंडे । संखेज्जे समतीदे, मिस्सुच्छिट्ठं हवे णियमा ॥124॥

- अन्वयार्थ- (मिच्छुच्छिट्ठादुवरिं) मिथ्यात्व की स्थिति उच्छिष्टावली शेष रहने के बाद (पल्लासंखेज्जभागिगे) पल्य का असंख्यात बहुभाग आयामयुक्त (संखेज्जे) संख्यात (खंडे समतीदे) खंड व्यतीत होने पर (णियमा) नियम से (मिस्सुच्छिट्ठं) मिश्र की उच्छिष्टावली (हवे) रहती है ॥124॥

www.JainKosh.org

मिश्र प्रकृति का अंतिम कांडक

मिथ्यात्व की उच्छिष्टावली शेष रहने पर (मिथ्यात्व के अंतिम कांडक की अंतिम फाली का पतन होने के पश्चात्) मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति के संख्यातों कांडक होते हैं ।

कांडक का आयाम शेष सत्त्व का असंख्यात बहुभाग होता है । ऐसे संख्यातों कांडकों के होने पर मिश्र प्रकृति का अंतिम स्थितिकांडक होता है ।

अंतिम कांडक में उच्छिष्टावली को छोड़कर शेष सारा सत्त्व कांडक में घात के लिये ले लिया जाता है ।

www.JainKosh.org

मिश्र प्रकृति का क्षय

कांडक की अंतिम फाली का पतन होने पर मिश्र प्रकृति का सारा द्रव्य सम्यक्त्व प्रकृति में संक्रमित हो जाता है ।

मात्र एक उच्छिष्टावली प्रमाण मिश्र प्रकृति के निषेक शेष रहते हैं ।

ये भी एक-एक समय में स्तिबुक संक्रमण के द्वारा उदयवान सम्यक्त्व प्रकृति में संक्रमित हो जाते हैं ।

ऐसा होने पर मिश्र प्रकृति भी सत्ता में से नष्ट हो जाती है ।

मात्र सम्यक्त्व प्रकृति का सत्त्व शेष रहता है ।

www.JainKosh.org

मिश्र प्रकृति का क्षय

मिश्र प्रकृति के अंतिमकांडक की अंतिमफाली का समय

मिश्र के अंतिमकांडक के पश्चात्

osh.org

मिस्सुच्छिट्ठे समये, पल्लासंखेज्जभागिगे खंडे ।
चरिमे पडिदे चेट्ठदि, सम्मस्सडवस्सठिदिसत्तो ॥125॥

- अन्वयार्थ - (मिस्सुच्छिट्ठे समये) मिश्र की उच्छिष्टावली रहती है उस समय में (पल्लासंखेज्जभागिगे) पल्य का असंख्यात बहुभागमात्र आयामयुक्त (चरिमे खंडे पडिदे) अंतिमखंड का पतन होने पर (सम्मस्स) सम्यक्त्व का (अडवस्सठिदिसत्तो) आठ वर्षमात्र स्थिति-सत्त्व (चेट्ठदि) रहता है ॥125॥

www.JainKosh.org

सम्यक्त्व प्रकृति का अंतिम कांडक

मिश्र प्रकृति का अंतिम स्थिति कांडक का आयाम $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ प्रमाण होता है ।

उसी समय सम्यक्त्व प्रकृति का स्थितिकांडक-आयाम मिश्र के आयाम से कुछ कम, ऐसा $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ भाग प्रमाण होता है ।

सम्यक्त्व प्रकृति के इस अंतिम कांडक में आठ वर्ष प्रमाण सत्त्व शेष रखकर शेष समस्त $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ भाग प्रमाण सत्त्व घाता जाता है ।

इससे मिश्र की उच्छिष्टावली शेष रहने पर सम्यक्त्व प्रकृति का सत्त्व 8 वर्ष प्रमाण बचता है ।

www.JainKosh.org

मिच्छस्स चरिमफालिं, मिस्से मिस्सस्स चरिमफालिं तु ।
संछुहदि हु सम्मत्ते, ताहे तेसिं च वरदव्वं ॥126॥

- अन्वयार्थ- जिस समय (मिच्छस्स चरमफालिं) मिथ्यात्व की अंतिम फालि (मिस्से) मिश्र में और (मिस्सस्स चरमफालिं तु) मिश्र की अंतिम फालि (सम्मत्ते) सम्यक्त्व में (संछुहदि) संक्रमित करता है (ताहे) उस समय (तेसिं च) उन दोनों का (मिश्र प्रकृति और सम्यक्त्व प्रकृति का) (वरदव्वं) उत्कृष्ट द्रव्य होता है ॥126॥

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व की अंतिम फाली का द्रव्य

मिथ्यात्व के अंतिमकांडक की अंतिम फाली का पतन होने पर मिथ्यात्व का सारा द्रव्य मिश्र में दिया जाता है । मिथ्यात्व का नाश होने से इसका द्रव्य स्वयं को तो दिया नहीं जा सकता । तब अगली प्रकृति मिश्र में यह द्रव्य संक्रमित होता है ।

इससे पूर्व के स्थितिकांडकों में तथा अंतिमकांडक की चरम फाली के पूर्व की फालियों में जो घात द्रव्य है, वह स्वयं अपनी ही प्रकृति याने मिथ्यात्व में ही नीचली स्थितियों को प्राप्त होता था । परंतु अंतिमकांडक की अंतिम फाली में स्वयं की नीचली स्थितियाँ देय-योग्य नहीं हैं । इसलिए अंतिम फाली का द्रव्य मिश्र प्रकृति में दिया जाता है ।

www.JainKosh.org

मिश्र की अंतिम फाली का द्रव्य

इसी प्रकार मिश्र के अंतिम कांडक की अंतिम फाली का पतन होने पर मिश्र का सारा द्रव्य सम्यक्त्व में संक्रमित होता है।

इससे पूर्व के स्थितिकांडकों में तथा अंतिमकांडक की चरम फाली के पूर्व की फालियों में जो घात द्रव्य है, वह स्वयं अपनी ही प्रकृति याने मिश्र में ही नीचली स्थितियों को प्राप्त होता था । परंतु अंतिमकांडक की अंतिम फाली में स्वयं की नीचली स्थितियाँ देय-योग्य नहीं हैं । इसलिए अंतिम फाली का द्रव्य सम्यक्त्व प्रकृति में दिया जाता है ।

www.JainKosh.org

मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति का उत्कृष्ट प्रदेश-सत्त्व

जब इन अंतिम फालियों का द्रव्य क्रमशः मिश्र में और सम्यक्त्व प्रकृति में संक्रमित होता है, तब मिश्र का और सम्यक्त्व का प्रदेश-सत्त्व क्रमशः उत्कृष्ट होता है ।

इसके पूर्व व पश्चात् इन दोनों का सत्त्व नियम से अनुत्कृष्ट ही होता है । संक्रमण होने पर ही उत्कृष्ट हो सकता है ।

www.JainKosh.org

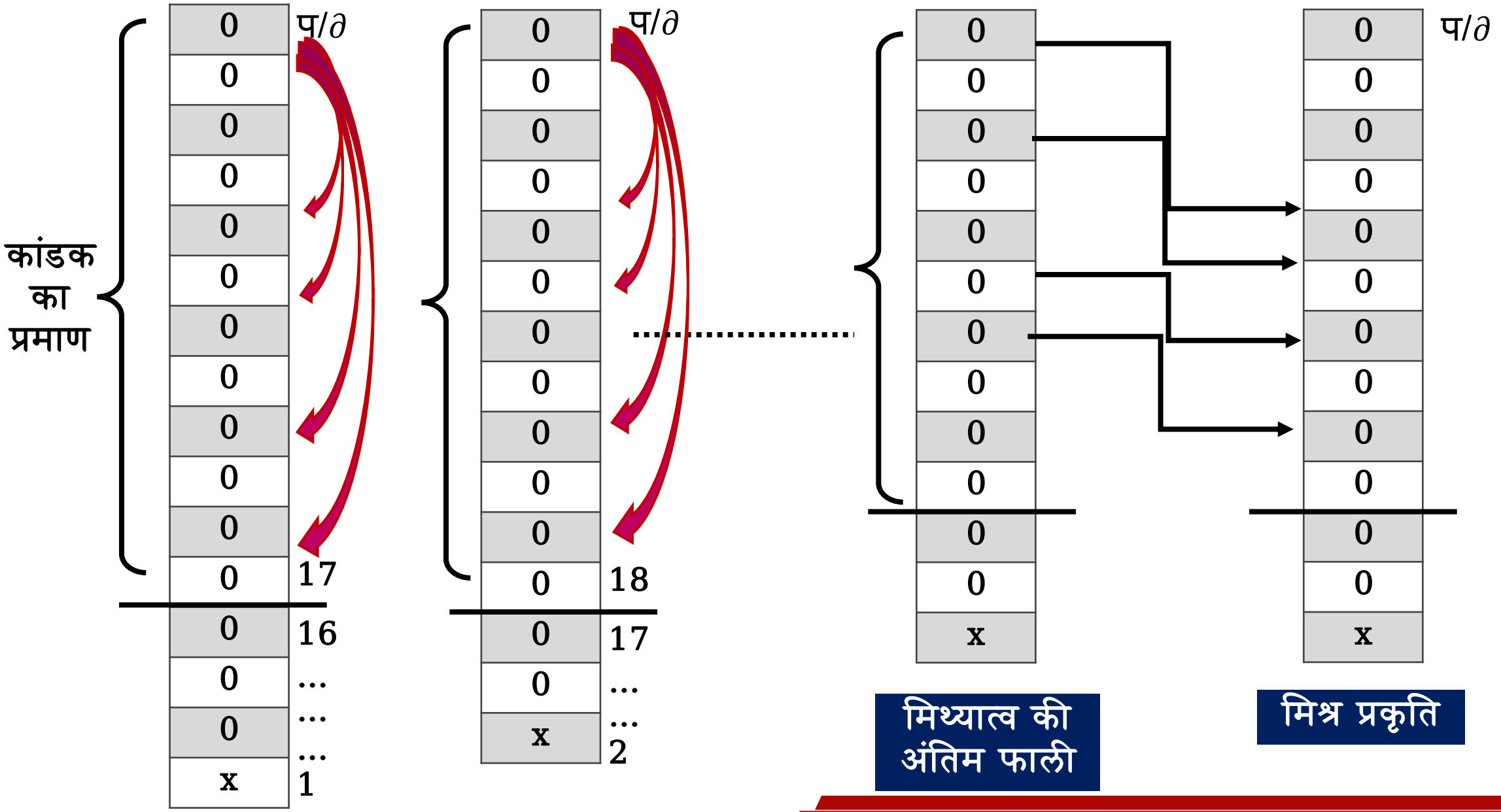

मिथ्यात्व का अंतिमकांडक

जदि होदि गुणिदकम्मो, दव्वमणुक्कस्समण्णहा तेसिं । अवरठिदी मिच्छदुगे, उच्छिट्ठे समयदुगसेसे ॥127॥

- अन्वयार्थ- (जदि) यदि (गुणिदकम्मो) गुणितकर्मांशवाला (होदि) हो तो (उसका उत्कृष्ट द्रव्य होता है ऐसा पीछे की गाथा से संदर्भ लेना चाहिए) (अण्णहा) अन्यथा अर्थात् गुणितकर्मांशवाला न हो तो (तेसिं) उस मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति का (दव्वं अणुक्कस्सं) द्रव्य अनुत्कृष्ट होता है।
- (मिच्छदुगे उच्छिट्ठे समयदुगसेसे) मिथ्यात्व व मिश्रप्रकृति की उच्छिष्टावली में दो समय शेष रहने पर (अवरठिदी) जघन्य स्थिति होती है । वहाँ उदयावली में अंतिम निषेकमात्र सत्त्व रहता है ॥127॥

www.JainKosh.org

गुणित कर्मांशिक

जिस जीव के कर्म-प्रदेशों का संचय उत्कृष्ट होता है, वह गुणित कर्मांशिक कहलाता है ।

यह संचय अनेक भवों में संक्लेश, उत्कर्षण, आयु, योग आदि कारणों से उत्कृष्ट होता है ।

www.JainKosh.org

उत्कृष्ट प्रदेश सत्त्व

दर्शनमोह क्षपक यदि गुणित-कर्मांशिक अवस्था से क्षपणा में उद्यत हुआ है, तो मिथ्यात्व के क्षय के समय मिश्र का तथा मिश्र के क्षय के समय सम्यक्त्व प्रकृति का सत्त्व उत्कृष्ट होता है क्योंकि मिथ्यात्व का द्रव्य उत्कृष्ट था ।

उसमें से अभी तक हुई निर्जरा घटाने पर भी बहुभाग द्रव्य मिथ्यात्वरूप से अवस्थित है ।

वह सर्व द्रव्य मिश्र में जाने पर मिश्र का द्रव्य उत्कृष्ट होना स्वाभाविक है ।

इसी प्रकार सम्यक्त्व प्रकृति का भी जानना चाहिए ।

अनुत्कृष्ट प्रदेश सत्त्व

यदि क्षपक गुणित-कर्मांशिक नहीं है अर्थात् क्षपणा से पूर्व उसका सत्त्व द्रव्य उत्कृष्ट नहीं हुआ है, तो मिथ्यात्व के क्षय के समय मिश्र का द्रव्य भी उत्कृष्ट नहीं होगा, अनुत्कृष्ट ही होगा ।

मिश्र का द्रव्य अनुत्कृष्ट है, तो सम्यक्त्व का द्रव्य भी अनुत्कृष्ट ही होगा ।

www.JainKosh.org

प्रश्न- गुणित कर्मांशिक जीव के किस प्रकार मिश्र का उत्कृष्ट संचय होता है ?

उत्तर- जो निरंतर गुणित कर्मांशिक विधि से कर्मस्थिति के काल तक

मिथ्यात्व का बंध करके

सातवें नरक में दूसरी बार यथाविधि उत्पन्न होकर अंतिम समय में मिथ्यात्व का उत्कृष्ट संचय करे ।

फिर क्रम से तिर्यंच में उत्पन्न होकर, यथाविधि अतिशीघ्र कर्मभूमिज मनुष्य होकर क्रम से वेदक सम्यक्त्वपूर्वक दर्शनमोह की क्षपणा में उद्यत हो ।

उसके मिथ्यात्व के अंतिमकांडक की अंतिम फाली का पतन होने पर मिश्र का द्रव्य उत्कृष्ट होता है ।

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व का जघन्य स्थिति-सत्त्व

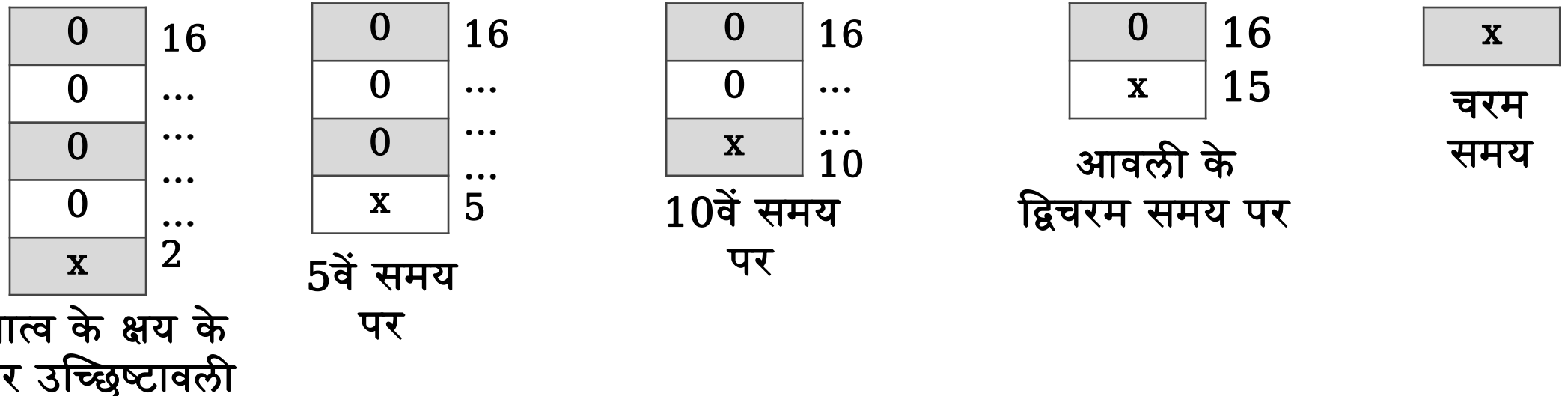

यहाँ द्विचरम समय में मिथ्यात्व की स्थिति जघन्य है । इससे कम मिथ्यात्व का सत्त्व नहीं पाया जाता है ।

यह जघन्य सत्त्व काल की अपेक्षा दो समय है क्योंकि दूसरे समय में कर्म का निषेक है, तो दो समय (वर्तमान और अगला) प्रमाण स्थिति हुई ।

निषेक की अपेक्षा सत्त्व एक निषेक प्रमाण है क्योंकि इन शेष दो समयों में निषेक एक ही है । वर्तमान समय में तो निषेक का अभाव है ।

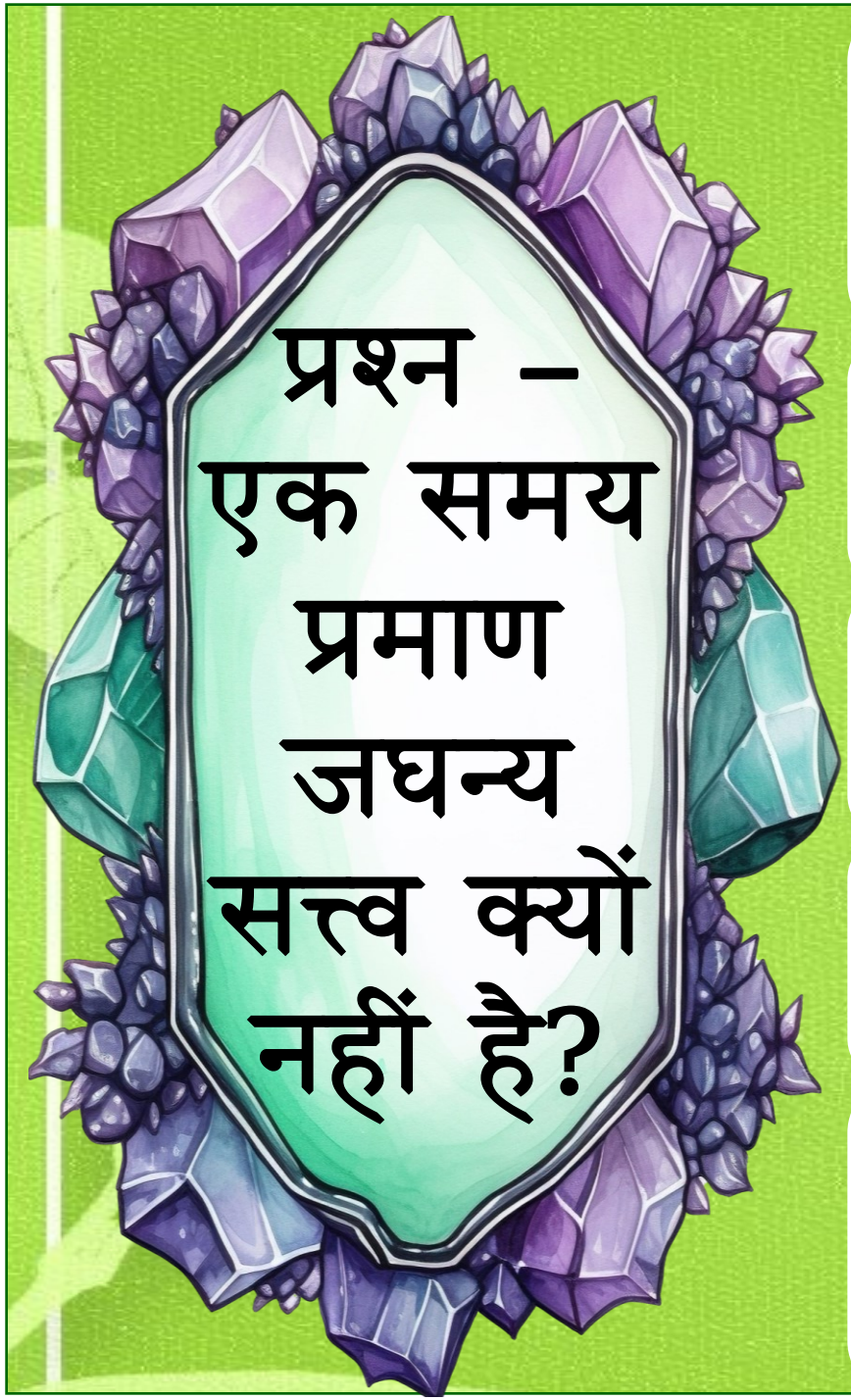

प्रश्न – एक समय प्रमाण जघन्य सत्त्व क्यों नहीं है?

उत्तर – क्योंकि अगले निषेक का वर्तमान समय में स्तिबुक संक्रमण द्वारा सम्यक्त्व प्रकृति में संक्रमण हो जाता है ।

इससे अंतिम निषेक जो एक समय प्रमाण है, वह बचता ही नहीं है ।

आवली के चरम समय में जाने पर निषेक का तो अभाव हो जाता है ।

इसलिए मिथ्यात्व का जघन्य सत्त्व दो समय प्रमाण ही होता है ।

इसी प्रकार मिश्र की उच्छिष्टावली के द्विचरम समय में मिश्र प्रकृति का जघन्य स्थिति-सत्त्व दो समय प्रमाण होता है।

मिस्सदुगचरिमफाली, किंचूणदिवड्ढसमयपबद्धपमा ।
गुणसेढिं करिय तदो, असंखभागेण पुव्वं व ॥128॥

- अन्वयार्थ - (मिस्सदुगचरिमफाली) मिश्रद्विक अर्थात् सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक् प्रकृति की अंतिम फालि का द्रव्य (किंचूणदिवड्ढसमयपबद्धपमा) कुछ कम डेढ़ गुणहानि गुणित समयप्रबद्धप्रमाण है।
- (पुव्वं व) पूर्व के समान (तदो) उस अंतिम फालि के द्रव्य में (असंखभागेण) पल्य के असंख्यातवें भाग से भाग देकर एकभाग (गुणसेढिं करिय) उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी करके उसमें देता है ॥128॥

www.JainKosh.org

मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति की अंतिम फाली का द्रव्य

मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति की अंतिम फाली का द्रव्य कुछ कम $\frac{3}{2}$ × गुणहानि × समयप्रबद्ध होता है ।

मिथ्यात्व का द्रव्य इतना था — स ∂ १२ – / ७ ख १७

स्थितिकांडकों एवं गुणसंक्रमण के द्वारा मिथ्यात्व के कुल द्रव्य का असंख्यातवाँ भाग छोड़कर शेष बहुभाग द्रव्य मिश्र को प्राप्त हुआ था ।

मिथ्यात्व का बहुभाग द्रव्य + मिश्र का स्वयं का द्रव्य = स ∂ १२ – / ७ ख १७ यह मिश्र का द्रव्य मिथ्यात्व के नाश के समय हुआ ।

पुनः स्थितिकांडकों एवं गुणसंक्रमण द्वारा इस द्रव्य का असंख्यातवाँ भाग छोड़कर शेष सर्व बहुभाग द्रव्य मिश्र की अंतिम फाली का द्रव्य है । स ∂ १२ – | (∂ – 1) / ७ ख १७ ∂

इसके अलावा सम्यक्त्व प्रकृति के 8 वर्ष प्रमाण सत्त्व को छोड़कर शेष सर्व स्थिति का द्रव्य सम्यक्त्व प्रकृति की अंतिम फाली का द्रव्य है । वह द्रव्य असंख्यात बहुभाग है । शेष रहा 8 वर्ष प्रमाण स्थिति का द्रव्य; असंख्यातवाँ भाग है ।

सम्यक्त्व की अंतिम फाली का द्रव्य = $\frac{\text{स}\,\partial\,१२ - |(\partial - 1)}{७\,\text{ख}\,१७\,|\,\text{गु}\,|\,\partial}$

इन दोनों फालियों का द्रव्य मिलाने पर $\frac{3}{2}$ × गुणहानि × समयप्रबद्ध होता है ।

मिश्र की अंतिम फाली + सम्यक्त्व प्रकृति की अंतिम फाली

$\frac{\text{स}\,\partial\,१२ - |\,(\partial - 1)}{७\,\text{ख}\,१७\,|\,\partial} + \frac{\text{स}\,\partial\,१२ - |\,(\partial - 1)}{७\,\text{ख}\,१७\,|\,\text{गु}\,|\,\partial} = \frac{\text{स}\,\partial\,१२ -}{७\,\text{ख}\,१७}$

फाली द्रव्य के निक्षेपण की व्यवस्था

यह सारा द्रव्य सम्यक्त्व की 8 वर्ष प्रमाण स्थिति में ही निक्षिप्त होना है ।

क्योंकि इसके अलावा सर्व स्थिति-सत्त्व नष्ट हो चुका है ।

यहाँ से सम्यक्त्व प्रकृति की उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी बनती है ।

इसके पूर्व उदयावली बाह्य गलितावशेष गुणश्रेणी थी ।

अब उदयावली से ही गुणाकाररूप से द्रव्य का सिंचन किया जायेगा ।

अतः इस फाली द्रव्य के दो विभाग करते हैं – एक उदयादि गुणश्रेणी हेतु, दूसरा उपरितन स्थिति हेतु ।

www.jainkosh.org

फाली द्रव्य स ∂ १२ – / ७ ख १७

एकभाग उदयादि गुणश्रेणी में

स ∂ १२ – / ७ ख १७ | प / ∂

आयाम = अंतर्मुहूर्त मात्र

बहुभाग उपरितन स्थिति में

स ∂ १२ – | (प / ∂ – 1) / ७ ख १७ | प / ∂

आयाम = (8 वर्ष – अंतर्मुहूर्त) प्रमाण

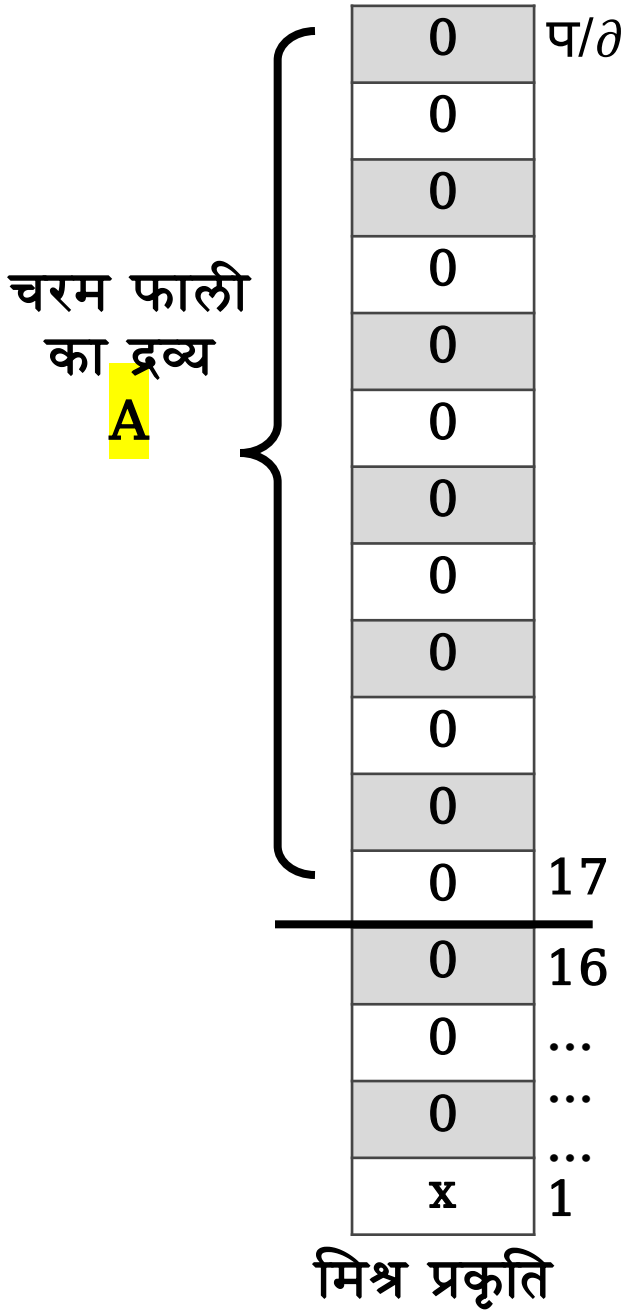

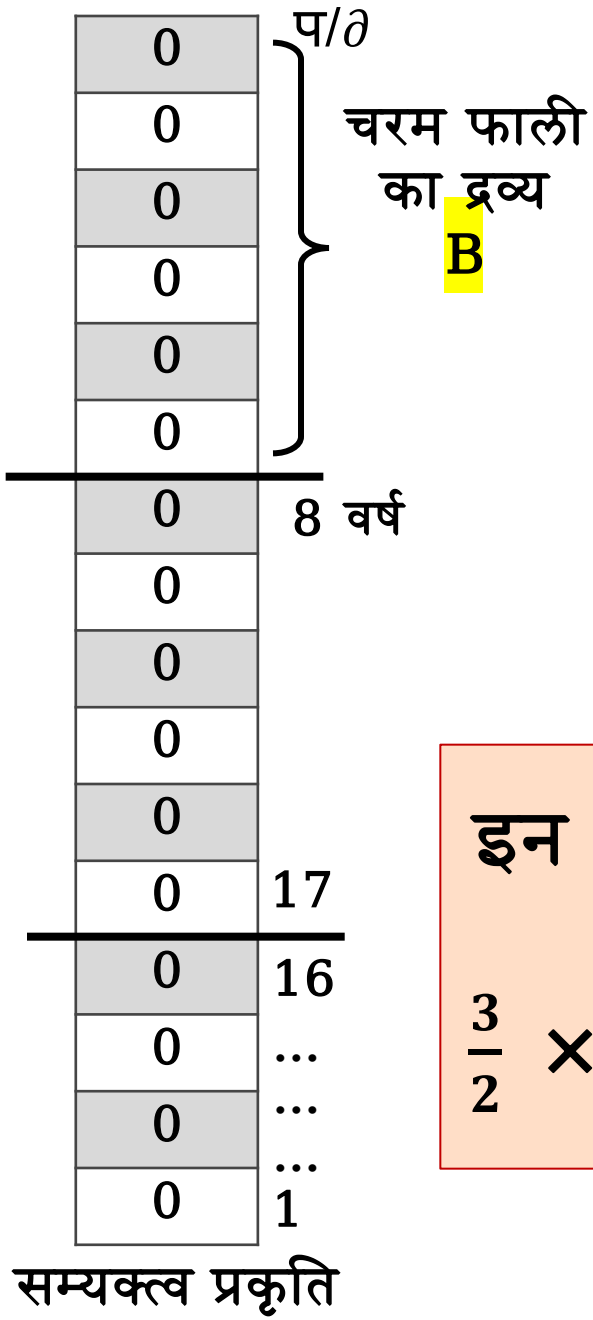

मिश्र और सम्यक्त्व की अंतिम फालियों का द्रव्य

इन दोनों फालियों (A + B) का द्रव्य मिलाने पर

$\frac{3}{2}$ × गुणहानि × समयप्रबद्ध होता है ।

गुणश्रेणी के द्रव्य का विधान

गुणश्रेणी का प्रमाण शेष रहा गुणश्रेणी का आयाम है, जो कि अंतर्मुहूर्त मात्र है ।

इस गुणश्रेणी के द्रव्य को उदय समय से पूर्वशीर्ष पर्यंत असंख्यात गुणित क्रम से देता है ।

शीर्ष के अगले निषेक में भी असंख्यात गुणा द्रव्य दिया जाता है । क्योंकि यहाँ से अवस्थित गुणश्रेणी हुई है ।

अतः उपरितन स्थिति का एक निषेक गुणश्रेणी में शामिल होता है । शामिल करने के लिए पूर्वशीर्ष से असंख्यात गुणा द्रव्य अगले निषेक में दिया है ।

यहाँ से शीर्ष प्रत्येक समय नया-नया होगा । क्योंकि पूर्वशीर्ष से अगला निषेक गुणश्रेणी में शामिल होता है ।

शेष बहुभाग द्रव्य का बंटवारा किस प्रकार होता है – यह आगे कहते हैं ।

सम्यक्त्व प्रकृति की अवस्थित गुणश्रेणी

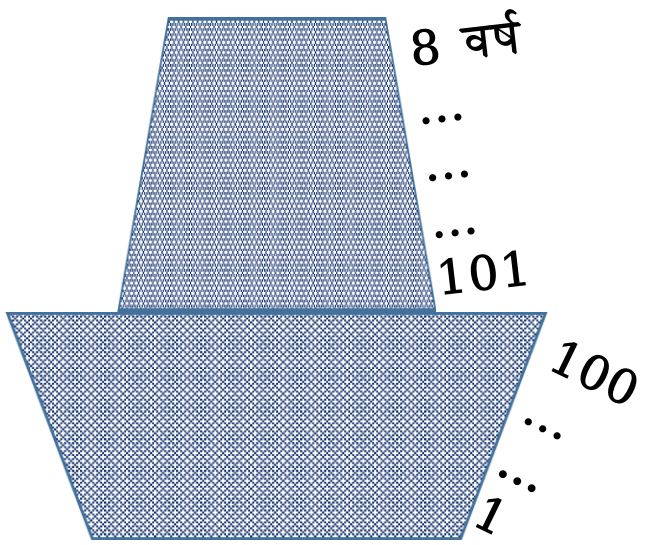

प्रथम
समय

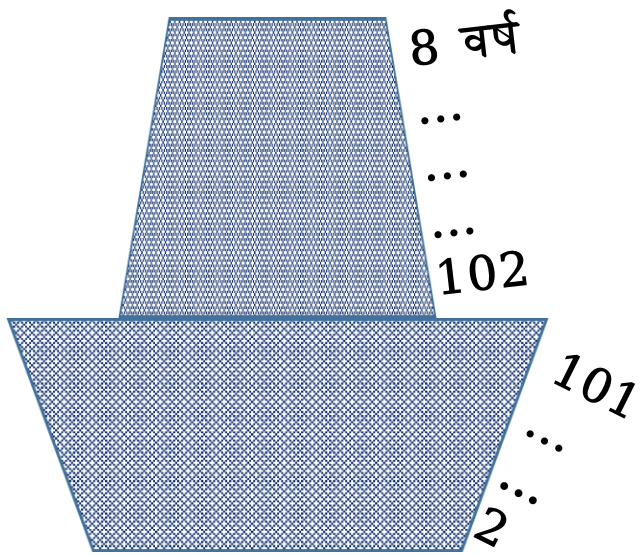

द्वितीय
समय

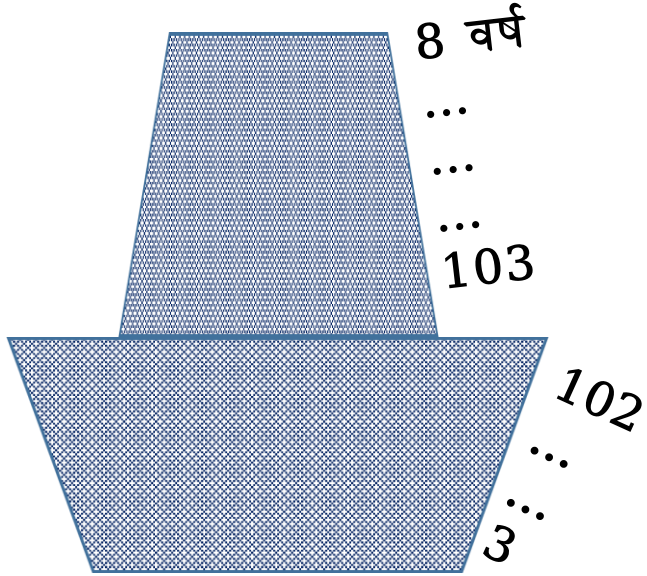

तृतीय
समय

www.JainKosh.org

सेसं विसेसहीणं, अडवस्सुवरिमठिदीए संछुद्धे ।
वरमाउलिंगसरिसी, रयणा संजायदे एत्तो ॥129॥

- अन्वयार्थ - (सेसं) शेष बहुभाग द्रव्य (अडवस्सुवरिमठिदीए) अन्तर्मुहूर्त कम आठ वर्ष मात्र उपरितन स्थिति में (विसेसहीणं) विशेषहीन क्रम से (संछुद्धे) देने पर (एत्तो) यहाँ से आगे (वरमाउलिंगसरिसी) उत्कृष्ट मातुलिंग के समान (रयणा) रचना (संजायदे) उत्पन्न होती है ॥129॥

www.JainKosh.org

उपरितन स्थिति में द्रव्य देने का विधान

शेष बहुभाग द्रव्य को उपरितन स्थिति में दिया जाता है । उपरितन स्थिति का प्रमाण (8 वर्ष – अंतर्मुहूर्त) है । यह एक गुणहानि प्रमाण द्रव्य नहीं है । अतः इसे मध्यमधन आदि के सूत्रों के माध्यम से चयहीन क्रम में बांटा जायेगा ।

$$\text{सर्व द्रव्य} = \frac{\text{स}\,\partial\,\text{१२} - \left(\frac{\text{प}}{\partial} - 1\right)}{\text{७ ख १७} \mid \frac{\text{प}}{\partial}}$$

यहाँ एक कम संख्या को गौण करके $\frac{\text{प}}{\partial}$ का अपवर्तन किया है, तो सर्व द्रव्य $= \frac{\text{स}\,\partial\,\text{१२} -}{\text{७ ख १७}}$

गच्छ = व८- याने 8 वर्ष से कुछ कम क्योंकि अंतर्मुहूर्त प्रमाण गुणश्रेणी का आयाम है । वह कुल 8 वर्ष प्रमाण स्थिति में से कम किया ।

सूत्र	संदृष्टि
मध्यमधन $= \frac{\text{सर्व द्रव्य}}{\text{गच्छ}}$	$\frac{\text{स}\,\partial\,\text{१२} -}{\text{७ ख १७} \mid \text{व ८} -}$
चय $= \frac{\text{मध्यमधन}}{\text{निषेकहार} - \frac{\text{गच्छ} - 1}{2}}$	$\frac{\text{स}\,\partial\,\text{१२} -}{\text{७ ख १७} \mid \text{व ८} - \mid \text{१६} - \frac{\text{व ८} - 1}{2}}$
प्रथम निषेक = चय × निषेकहार	$\frac{\text{स}\,\partial\,\text{१२} - \mid \text{१६}}{\text{७ ख १७} \mid \text{व ८} - \mid \text{१६} - \frac{\text{व ८} - 1}{2}}$

www.jainkosh.org

उपरितन स्थिति में द्रव्य का बंटवारा

प्रथम निषेक में देय द्रव्य से दूसरे निषेक में देय द्रव्य चयहीन है । दूसरे से तीसरे में चयहीन है। इस प्रकार 8 वर्ष की चरम स्थिति पर्यंत चयहीन क्रम से द्रव्य दिया जाता है ।

ऐसा द्रव्य दिया जाने पर गुणश्रेणी के अंतिम निषेक से ऊपर के निषेक में गुणश्रेणी के अंतिम निषेक से असंख्यात गुणा द्रव्य होता है क्योंकि असंख्यात बहुभाग द्रव्य का उपरितन स्थिति में निक्षेपण किया है । उपरितन स्थिति (8 वर्ष – अंतर्मुहूर्त) होने से यह दिया द्रव्य पूर्व निषेक के द्रव्य से असंख्यात गुणा हो जाता है ।

सामान्यतया गुणश्रेणी शीर्ष से अनंतर निषेक में असंख्यात गुणा हीन द्रव्य होता है । पर वैसा यहाँ नहीं है, इसलिए इसे अलग से कहा है ।

उपरितन स्थिति के प्रथम निषेक के अनंतर द्वितीयादि निषेक में चयहीन क्रम से द्रव्य है ।

सम्यक्त्व प्रकृति का सत्त्व द्रव्य

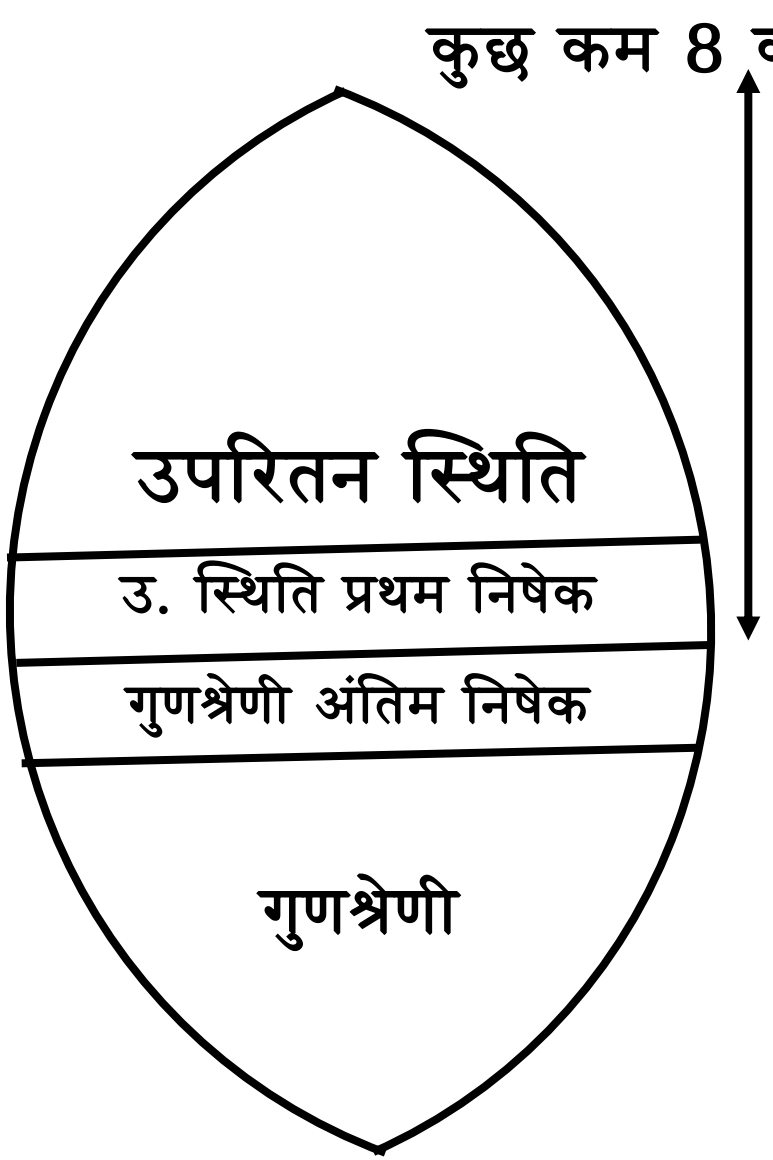

इस प्रकार द्रव्य दिये जाने पर सम्यक्त्व प्रकृति के सत्त्व द्रव्य का आकार मातुलिंग फल के समान हो जाता है ।

यह फल गोल, लंबा और नुकीला होता है।

www.JainKosh.org

अडवस्सादो उवरिं, उदयादिअवट्ठिदं च गुणसेढी । अंतोमुहुत्तियं ठिदिखंडं च य होदि सम्मस्स ॥130॥

- अन्वयार्थ - (अडवस्सादो उवरिं) आठ वर्ष स्थिति करने के समय से आगे सभी समयों में (उदयादिअवट्ठिदं च गुणसेढी) उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी आयाम है।
- (च य) और (सम्मस्स) सम्यक्त्व प्रकृति का (अंतोमुहुत्तियं) अन्तर्मुहूर्त प्रमाण आयामयुक्त (ठिदिखंडं) स्थितिकाण्डक (होदि) होता है ॥130॥

www.JainKosh.org

सम्यक्त्व प्रकृति की यहाँ से आगे उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी होती है । उपरितन स्थिति का एक-एक निषेक गुणश्रेणी में मिलता जाता है ।

जब से सम्यक्त्व प्रकृति की 8 वर्ष प्रमाण स्थिति होती है, तब से स्थितिकांडक का आयाम अंतर्मुहूर्त प्रमाण होता है ।

विदियावलिस्स पढमे, पढमस्संते च आदिमणिसेये । तिट्ठाणेणंतगुणेणूणकमोवट्टणं चरमे ॥131॥

- अन्वयार्थ - (विदियावलिस्स पढमे) द्वितीयावली के प्रथम निषेक में, (पढमस्संते) प्रथम आवली के (उदयावली के) अंतिम निषेक में (च आदिमणिसेये) और प्रथम निषेक में (तिट्ठाणे) इन तीन स्थानों में (णंतगुणेणूणकमोवट्टणं) क्रम से अनन्तगुणा कम अनुभाग का अपवर्तन (चरमे) अंतिम उच्छिष्टावली तक होता है ॥131॥

www.JainKosh.org

अनुभाग की अपर्वतना

सम्यक्त्व की 8 वर्ष प्रमाण स्थिति होने के पूर्व तक सम्यक्त्व प्रकृति का अनुभागकांडकघात होता है ।

याने एक-एक अंतर्मुहूर्त में अनंत बहुभाग अनुभाग नष्ट किया जाता है ।

तथा यह अनुभाग-सत्त्व द्विस्थानीय लता-दारुरूप पाया जाता है ।

अब 8 वर्ष प्रमाण सत्त्व होने पर अनुभागकांडकघात नहीं होकर प्रत्येक समय में अनुभाग की अपर्वतना होती है ।

अब अनंत अनुभाग घात करने में अंतर्मुहूर्त नहीं लगता, वरन् एक समय में ही बहुभाग अनुभाग का घात होता जाता है ।

अनुभाग की अपर्वतना

यहाँ से ही सम्यक्त्व प्रकृति का द्विस्थानीय अनुभाग नष्ट होकर एकस्थानीय लता प्रमाण मात्र शेष रहता है ।

सम्यक्त्व प्रकृति के अंतिम अनुभागकांडक की अंतिम फाली के पूर्व तक द्विस्थानीय अनुभाग रहता है । अंतिम फाली के पतन होने पर सम्यक्त्व प्रकृति का लतारूप अनुभाग शेष रहता है ।

यह अनुभाग भी उदयावली के निषेकों एवं उपरितन स्थिति में अनंत गुणा हीन पाया जाता है ।

www.JainKosh.org

अनुभाग सत्त्व

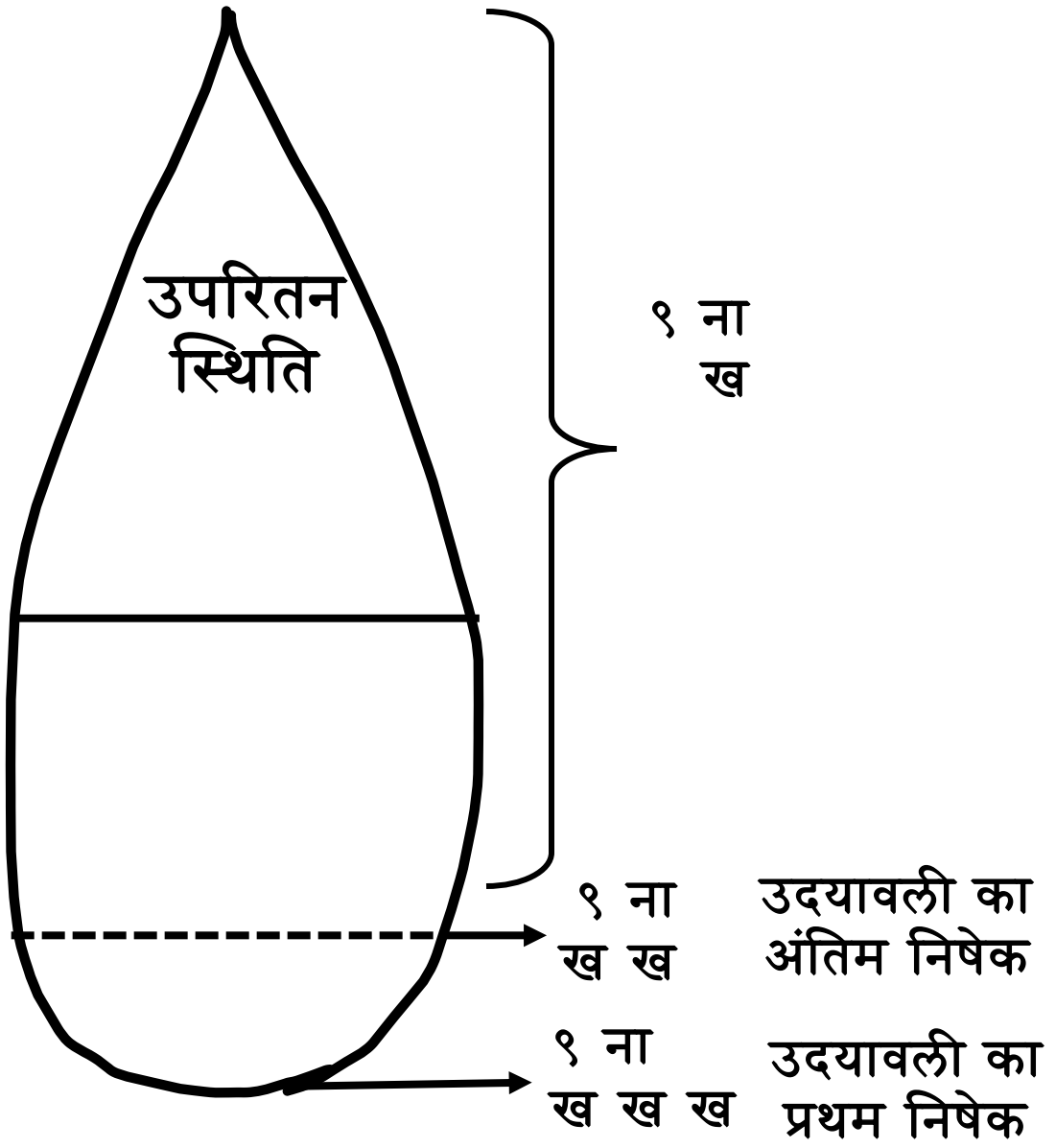

1) उपरितन स्थिति का अनुभाग पूर्व के अनुभाग से अनंतगुणा हीन है ।

2) इससे उदयावली के अंतिम निषेक का अनुभाग अनंतगुणा हीन है ।

3) इससे उदयावली के प्रथम निषेक का अनुभाग अनंतगुणा हीन है ।

शेष रहे अनुभाग के अलावा सारा अनुभाग विशुद्धि के माहात्म्य से अपवर्तित हो गया है।

www.JainKosh.org

इस प्रकार द्वितीयादि समयों में भी अनुभाग का प्रतिसमय अनंत बहुभाग अपवर्तन होता है । इससे उपरितन स्थिति, उदयावली का अंतिम निषेक और प्रथम निषेक में अनंतगुणाहीनपना पाया जाता है ।

यह क्रम सम्यक्त्व प्रकृति की (1 आवली + 1 समय) प्रमाण स्थिति शेष रहने तक चलता है ।

उसके बाद एक आवली मात्र शेष रहने पर मात्र उदयावली में ही अनुभाग का अपवर्तन प्रत्येक समय में होता है ।

चरम आवली के प्रथम निषेक के अनुभाग से अगले समय में उदयनिषेक में अनंतगुणाहीन अनुभाग होता है ।

3 क्रिया परिवर्तन

इस प्रकार सम्यक्त्व की 8 वर्ष प्रमाण स्थिति-सत्त्व रहने के समय से 3 क्रिया परिवर्तन हुए –

1) गुणश्रेणी	• गलितावशेष गुणश्रेणी से उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी हुई ।
2) स्थितिकांडक	• स्थितिकांडक का आयाम अंतर्मुहूर्त प्रमाण हुआ।
3) अनुभागकांडक	• अनुभागकांडकघात समाप्त होकर प्रतिसमय अनुभाग की अपवर्तना प्रारंभ हुई ।

www.JainKosh.org

- Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे, बाहुबली (वर्तमान में आर्यिका श्री शुद्धोहंश्री माताजी)

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889

- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं लब्धिसार की प्लेलिस्ट चुनें ।